بسم الله الرحمن الرحيم

परहेज़गार

लेखक

हज़रत नुसरत आलम शेख (जाफ़र)

ज़रूरी बोल

जब मेरे ज़ेहन में परहेज़गारी पर लिखने का खयाल आया तब मुझे अपनी ज़िन्दगी पर रौशनी डालने का खयाल आया जिस मौज़ू पर हम लिख रहे हैं तो क्या हम खुद परहेज़गार है या नहीं क्युकी परहेज़गार बन्ना और उसपर लिखना दोनों में बहुत बड़ा फर्क है अगर इस किताब को परहेज़गारी पर अमल करने वाला लिखेगा तो उसका असर हर इंसान पर मज़बूत तरीके से पडेगा और अगर सिर्फ किताब पर लिखना और यह उम्मीद करना के मैं इससे नामवर हो जाउंगा तब तो यह बेईमानी हुई और हम रास्ते से भटक जाएंगे। इसलिए इस किताब को लिखने से पहले मैंने कुरआन की तमाम आयतों को समझा और उसी की रौशनी में लिखना शुरू किया। यह किताब लिखने पर जो भी नेकिया मुझे मिले वह सब अपने वालदैन के सुपुर्द करता हूँ। खुदा हमारे वालदैन को जज़ा-ए-खैर अता फरमाए। खुदा हमे परहेज़गारी पर चलने की तौफीक अता फरमाए आमीन।

शुक्रिया

हज़रत नुसरत आलम शेख (जाफ़र)

परहेज़गारी यह नहीं की नमाज़ बा-जमात ५ वक्त पढ ली, या रोज़ा रखा, ज़कात अदा करदी, या हज पर चले गए और हाजी बन गए I बल्कि परहेज़गार वह हुआ जो इस्लाम के पांचो अरकान पूरा करते हुए, या उसपर अमल करते हुए यतीमो, मिस्कीनो, मुसाफिरों, राहगीरों, पड़ोसियों और हर मखलूक की मदद करे यहाँ तक की जब रास्ते पर चल रहे हो तो रेंगने वाली चीटी का भी ख़याल रखो की कहीं वह पैर के नीचे कुचल कर मर ना जाए I

राह चलते हुए राहगीर को हमारी ज़ात से तकलीफ ना पहुंचे, हमारी ज़बान पर हमारा इतना काबू हो के किसी के दिल को बे वजह ठेस ना पहुंचे और हमारे झूट बोलने से नाहक किसी को जानी व माली नुक्सान ना पहुंचे और हमारी आँखों पर वह पर्दा पड़ा हो ताकि किसी बेहयाई को हम ना देख सके और कानो में वह कुवत हो की बुराइयां सुनकर भी नेकियो पर अमल करते रहे I जब हम इस तरह का एहतेराम करेंगे तो कहलाएंगे परहेज़गार, अगर हमने सिर्फ नामजो और रोज़ो का बखूबी एहतेराम किया और बकिया अरकान को तवज्जो नहीं दी तो मुसलमान तो कहलाएंगे लेकिन परहेज़गार नहीं I अगर हमे मोमिन बन्ना है तो परहेज़गार रहना पडेगा या हम कहें की परहेज़गार कहलाने के लिए मोमिन बन्ना पडेगा I

परहेज़गार की मिसाल इस तरह है के अगर कोई शक्स बीमार पड़ जाए और वह डॉक्टर के पास जाए, की डॉक्टर साहब मुझे अचानक चक्कर आ जाती है और जिस्म में अगर घाव बन जाए तो जल्द अच्छे नहीं होते, तो डॉक्टर ने अपने इल्म का इस्तेमाल किया और मरीज़ से कहा की तुम्हारी बीमारी मैं समझ गया हूँ इसके लिए तुम्हे यह कुछ गोलिया देता हूँ, तुम इसे सुबह नास्ते के बाद और दोपहर में खाने के बाद और रात में सोने के पहले लगातार एक हफ्ते खानी है I लेकिन तुम्हे परहेज़ भी करना होगा मरीज़ ने कहा डॉक्टर साहब किस चीज़ का परहेज़ ?I डॉक्टर बोला आप मीठा कतई ना खाए चावल और दाल वगैरह भी ना खाए I तब जा कर आप इस बीमारी से निजात पा सकते हैं I मरीज़ को अब अगर अच्छा होना है तो वह डॉक्टर की राय पर अमल करेगा और बीमारी से निजात पा जाएगा, अब मरीज़ अगर डॉक्टर की दी हुई हिदायत पर ना चले तो मरीज़ कभी अच्छा नहीं हो सकता I या गोलिया वगैरह वक्त पर खाए लेकिन परहेज़ ना करे तो मरीज़ की सेहत खराब रहेगी, या फिर परहेज़ करे और दवा ना खाए यह कहते हुए की दवा बहुत कडवी है इसलिए मैं इसे नहीं खा सकता तो भी मरीज़ अच्छा नहीं हो सकता, यानी मरीज़ को सेहतमंद होने के लिए दवा के साथ-साथ पूरा परहेज़ करना होगा, या कहें की परहेज़ के साथ साथ दवा भी खानी पड़ेगी तब कहीं जा

कर मरीज़ सेहतमंद होगा और बीमारी से निजात भी मिलेगी। उसी तरह जैसे की नमाज़ी को तमाम नमाज़ पूरी करते हुए मिस्कीनो, मुसाफिरों, चरिन्दो और परिन्दो का खयाल करते हुए परहेज़गार कहलाते हैं। ना की इबादत रब की ही करते रहे और उस रब की मख्लूको को नज़र अंदाज़ करते रहे तो हम परहेज़गार नहीं कहलाएंगे।

जैसे की अल्लाह पाक कुरआन की दूसरी सूरेह, **<u>सूरेह बकरा की आयत न.२१</u>** में अल्लाह फरमाता है "लोगो अपने परवरदिगार की इबादत करो जिसने तुमको और उन लोगो को जो तुमसे पहले गुजरे हैं पैदा किया अजब नहीं तुम परहेज़गार बन जाओ"।

इस आयत में अल्लाह खुद फरमा रहा है की परहेज़गार बन्ना चाहते हो तो मेरी इबादत करो यानी रोज़ा, नमाज़, ज़कात, हज करते हुए यतीमो, मिस्कीनों, मुसाफिर और तमाम शर्तो का ख़याल करते रहो। ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ यहाँ पर अजब का इस्तेमाल यह बताता है की अगर तुम लोगो से कुछ गुनाह या नाफ़रमानी हो गई तो क्या हुआ अगर तुम अब नेक रास्ता इख्तियार कर लो तो ताज्जुब नहीं मैं तुम्हे परहेज़गारों में शरीक कर लूँ।

<u>सूरेह बकरा की आयत न.२२ से २३</u> में अल्लाह अपने बन्दों को याद दिला रहा है की "मैंने तुम्हारे ठहरने के लिए ज़मीन को फर्श बनाया और आसमान को छत और आसमान से मेह बरसा कर ज़मीन से तुम्हारे लिए फल पैदा किए ताकि तुम्हारी गिज़ा बन सके और यह नेमते अल्लाह के अलावा और किसी के बस की बात नहीं इस लिए खुदा के अलावा किसी और को अपना शरीक ना ठहराओ नहीं तो तुम गुनेह गारो में शरीक हो जाओगे और यह कुरआन मैंने अपने बन्दे (मुहम्मद स.अ) पर उतारी है और अगर तुमको इसपर ज़रा भी शक है तो इस कुरआन से मिलती जुलती एक आयत बनाकर दिखाओ और तुम अल्लाह के अलावा जिन्हें मदद गार समझते हो वह तुम्हारे किसी काम के नहीं" I

<u>सूरेह बकरा की आयत न.२५</u> में अल्लाह परहेज़गारो के लिए जन्नत का वादा कर रहा है I की परहेज़गार को ही जन्नत की नेमतो से नवाज़ा जाएगा और आयत में मिलते जुलते मेवो का ज़िक्र इस लिए किया गया है, क्युकी जन्नत में अगर दुनियावि फलो के जैसे पेड़ ना होंगे तो इंसान डर की वजह से उसे नहीं खाएगा, क्युकी यह इंसानी फितरत है के वह अनजानी चीजों से परहेज़ रखता है I कहीं वह इसे नुक्सान ना पहुंचाए लेकिन जब वह देखेगा की यह तो वही अंगूर और अनार है जो की दुनिया में हम खा चुके हैं I तो खाना शुरू करेगा, लेकिन जब

उसे जाईका मिलेगा तो कह उठेगा की ऐसे फल और मेवे मैं पहली बार खा रहा हूँ और रही बात बीवियों की तो वह पाक साफ़ होंगी उन्हें हैज़ से निजात मिल चुकी होगी।

<u>आयत न.२६ सूरेह बकरा</u> में अल्लाह ने मच्छर की मिसाल बयान की तो मुशरिको (काफ़िरो) ने आवाज़ उठाई की अल्लाह को यहाँ मिसाल-ए-मच्छर की क्या ज़रूरत थी ? | मक्का में चीटियां मच्छर से बड़ी होती है और मच्छर से भी छोटे छोटे जानवर मौज़ूद हैं लेकिन वह आम आँखों से नहीं दीखते नहीं तो अल्लाह तो उसका ही जिक्र करता | तो मच्छर के मुकाबले हाथी की मिसाल है | की हाथी जो ज़मीन का सबसे बड़ा जानवर है, लेकिन वह अपनी सूंड से ग़िज़ाह सीधे तौर पर पेट में नहीं पहुंचा सकता | जबकि मच्छर बिलकुल अदना है उसकी भी एक सूंड होती है और जैसे ही वह सूंड अपने शिकार में चुभोता है फ़ौरन खून सीधे तौर पर उसके पेट में पहुँच जाता है | यानी अल्लाह पाक यह बयान कर रहा है की हम अदना चीज़ को आला चीज़ पर अफज़ल करते हैं, और जो लोग इन आयातों पर यकीन नहीं रखते तो वह अपनी गलतियों की वजह से भटक जाते है | ना की अल्लाह उन्हें भटकाता है | क्युकी अगर अल्लाह किसी को भटकाए तो अल्लाह उन्हें सजा क्यों देगा |

<u>सूरेह बकरा की आयत न.२६</u> में अल्लाह फरमा रहा है "अल्लज़ीना यनकुजुन युज़िल्लू बिही कसिरन" यहाँ पर युज़िल्लू का मतलब है **भटकना** ना की **भटकाना** तो जो परहेज़गार नहीं होंगे वह भटक जाएंगे।

<u>सूरेह बकरा की आयत न.३०</u> में एक भेद सामने आया जब अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने फरिश्तो से कहा की मैं ज़मीन पर एक नायाब बनाने वाला हूँ तो फरिश्तो ने दलील दी हम फ़रिश्ते आपकी ही इबादत करते हैं और परहेज़गार हैं और इंसान झगडालू है। तो क्या आप ऐसे को अपना नायाब बनाएंगे। यहाँ पर फरिश्तो की यह ख्वाहिश थी की आप हम में से ही किसी एक को नायाब बना और यही वजह हुई की आज तक इंसानों और फरिश्तो में जंग चली आ रही है। क्युकी इब्लीस एक फ़रिश्ता था जिसने अल्लाह के अपने नायाब (आदम) को सजदा करने से इनकार किया, तो अल्लाह पाक ने उसे सजा के तौर पर शैतान करार दिया और उसपर ता ज़िन्दगी भर लानत भेजी।

<u>सूरेह बकरा की आयत न.३१</u> में अल्लाह ने आदम (अ.स) को सब नाम बता दिए तो वह कौनसे नाम थे जो अल्लाह को बहुत पसंद थे और जब आदम (अ.स) से नाफ़रमानी हुई, तो अल्लाह पाक ने ३०० साल के लिए हव्वा (अ.स) से जुदा रखा और जब उन्हें याद आया तो बोल उठे "या पाक परवरदिगार तू मुझे

अपने हबीब और उनके एहलो अवाल के सदके में माफ़ कर दे" और अल्लाह पाक ने आप की दुआ क़ुबूल की और आदम (अ.स) को हव्वा (अ.स) से मुलाकात करवा दी l यानि **<u>आदम (अ.स)</u>** को सबसे पहले आखरी रसूल और उनके खानदान के नाम बताए और बाद में आने वाले पैगम्बरों के नाम बताए l तभी तो आपने ख्वाहिश की थी की जब " नूह " की कश्ती चले तो मेरा ताबूत कश्ती में रख देना और जहां कश्ती का सफ़र ख़त्म हो तो वहीं मुझे दफ़न कर देना और नूह (अ.स) ने ऐसा ही किया आपके ताबूत को **<u>"नजफ़-ए-अशरफ"</u>** में दफ़न कर दिया l

अल्लाह ने जब फरिश्तो से कहा की मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते की कौन-कौन से नबी है जो आसमानों और ज़मीन दोनों जगह मौज़ूद है l जैसा की हम जानते हैं की आखरी नबी का ज़मीन पर नाम "मुहम्मद (स.अ)" है l लेकिन आसमानों में आपका नाम "अहमद (स.अ)" है जो आपकी परहेज़गारी की वजह का तोहफा है और इंशा-अल्लाह हमेशा रहेगा l

<u>सूरेह बकरा की आयत न.३४</u> में अल्लाह ने कहा और इब्लीस ने कहना ना माना या बेहुकुमती की और वह काफिर हो गया यानी जो परहेज़गार है वह

अल्लाह की ना फ़रमानी नहीं करते हैं बलकी हुकुम मान कर परहेज़गार हो जाते हैं I

<u>सूरेह बकरा आयत न.३५</u> में अल्लाह पाक ने आदम (अ.स) से कहा इस पेड़ के पास मत जाना नहीं तो नुकसान में पड़ जाओगे यहाँ पर आलिमो ने "ज़ालिमीन" का गलत मतलब निकाला और कहा **<u>गुनेहगार</u>**, जबकि सही मतलब है **<u>नुकसान</u>** अब अगर पैगम्बर, खलीफा, इमाम, वली गुनाह करे तो वह क्या इस ओहदे के काबिल हो सकते हैं अगर पैगम्बर वगेहरा गुनाह करें तो एक आम इंसान और उनमें क्या फर्क रह जाएगा I

अल्लाह पाक ने आदम (अ.स) को एक खूबसूरत पेड़ का इशारा किया I यहाँ तो वह उस पेड़ के पास नहीं गए बलकी उनकी जौज़ा उसी किस्म की दुसरे पेड़ के पास गई I यहाँ पर गलत फ़हमी साफ़ तौर पर दिख रही है, ताकि बेहुक्मती (गुनाह) ज़ाहिर ना हो सके I

<u>सूरेह बकरा आयत न.३८</u> में अल्लाह का यह कहना जो लोग इनकार करेंगे और हमारी आयातों को झुटलाएंगे वही दोज़की होंगे I मतलब परहेज़गार वह है

जो अल्लाह के हुकुम पर चलते हैं और उसकी ज़ात को इनकार नहीं करते और झूट नहीं बोलते |

<u>**सूरेह बकरा की आयत न.४१**</u> में अल्लाह फरमाता है "कुरआन जो मैंने उतारा है वह तौरेत की तस्दीक करता है जो तुम्हारे पास है और सबसे पहले इसके इनकार करने वाले ना-बनो और मेरी आयातों को थोडीसी कीमत के बदले मत बेचो और मुझसे ही डरते रहो" | यहाँ पर यहुदी के दो आलिमो का ज़िक्र है जिसमें एक नाम **"हई बिन अख्ताब"** और दुसरे का नाम **"काअत बिन अशरफ"** था | यह दोनों आलिम तौरेत की आयातों को लोगो तक पहुंचाते थे बदले हुकूमत और लोगो के माले दौलत लिया करते थे और आयातों को तोड़-मरोड़ कर पेश किया करते थे | तब यह आयत उतरी के तुमने ही इसकी पैरवी की थी और अब तुम सबसे पहले इसके मुनकिर ना हो | क्युकी **ज़कात** यहुदीयों पर बहुत भारी थी और इसको रोकने के लिए ही यह आयातों को बदला करते थे | यहाँ पर ज़कात का मतलब **फितरा** से है क्युकी उस वक्त लोग काफी गरीब हुआ करते थे तो ज़कात कहाँ से निकालते इसलिए बतौर **फितरा २.५ किलो गेहूं** का हुकुम था |

<u>**सूरेह बकरा की आयत न.४५**</u> में **सब्र** और **नमाज़** के ज़रिये मदद लो बेशक यह कठिन काम है मगर उनपर नहीं जिनके दिलो में मेरा डर है |

इस आयत में सब्र का मतलब रोज़े से है, के जब परेशानी और मुसीबत में घिर जाओ तो नमाज़ में खड़े हो जाओ और रोज़ा रख लो और यहीं से परहेज़गारी उजागर होती है।

<u>सूरेह बकरा कि आयत न.४६ से ४९</u> में अल्लाह पाक का याकूब की औलाद से मतलब बनी इज़राइल से है जब अल्लाह पाक ने युसूफ (अ.स) को हुकूमत सौंपी और उन्हें कैदी से बादशाह किया और जब फिरऔन मूसा (अ.स) को क़त्ल करने के इरादे से हज़ारो आदमियों को क़त्ल कर रहा था और औरतो को अपनी खिदमत में रखता था फिर और उस ज़ालिम फिरऔन को अल्लाह ने नील नदी में डुबा कर साथ में उसका लश्कर भी नीस्त-ओ-नाबूद कर दिया. यहाँ अल्लाह ताअला अपने किए एहसानों को याद दिला कर उन्हें (नाफरमानो को) हिदायत देना चाहता है।

<u>सूरेह बकरा की आयत न.५० से ५४</u> में अल्लाह ने उस वक्त का ज़िक्र किया जब मूसा (अ.स) तूर पहाड़ पर ४० रात के लिए चले गए थे जहां आपको तौरेत हासिल हुई और अपनी कौम को अपने भाई हारून की खिलाफत में दे गए थे और इसी दरमियान **सामरी** नाम का एक शक्स ने कौम को गुमराह कर दिया उसने एक बछड़ा बनाया और बनी इज़राइल से कहा यही तुम्हारा खुदा है, तुम इसकी

इबादत करो। चुनांचे पूरी कौम गुमराह हो गई और जब आप ४० रात पूरी करके वापस आए तो आपने उस बुत को समुद्र में फेक दिया और कौम से कहा, तुम्हारी तौबा यही है के तुम आपस में एक दुसरे को ख़त्म कर दो। चुनांचे ऐसा ही किया गया और २४००० लोग मौत की नींद सो गए। जिस जगह पर यह इकठ्ठा थे और एक दुसरे के हाथो में तलवार थी, तभी अल्लाह पाक ने काले-काले बादलों से उस जगह को अँधेरे में ढ़ाक दिया ताकि एक दुसरे का क़त्ल करते वक्त अपने रिश्तों का ख़याल ना रहे और हाथ रूक जाए। यह अल्लाह का एहसान था जो की उनकी तौबा क़ुबूल करने के सबब हुआ।

<u>सूरेह बकरा की आयत न.५७ से ५९</u> में उस वक्त का ज़िक्र है जब मूसा (अ.स) फिरऔन से बचने के बाद दरिया-ए-नील को पार करके **<u>"आमेलेक"</u>** शहर पहुँच गए, तो इनके पास खाने पीने का कोई बंदोबस्त ना था। तभी मूसा (अ.स) ने बारगाहे इलाही में हाथ उठाया "या अल्लाह हम तेरे हुक्म से यहाँ तक पहुँच गए अब इनकी गिजाह का बंदोबस्त कर दे" चुनांचे अल्लाह पाक ने आसमान से भुनी हुई तीतर और बटेर उतारी जो की लगातार आती रही और यही इनका रिज़क बन गया। फिर इन लोगो ने मूसा (अ.स) से कहा के "ए मूसा अब हम लोग एक ही चीज़ खाते खाते थक चुके हैं आप रब से दुआ करें के हमारे लिए गेहूं, दाल,

सब्जी, प्याज़ वगैराह भेजो" इसपर मूसा (अ.स) बोले के अगर अल्लाह के आला रिज़क में मुकाबले अदना रिज़क चाहते हो तो जाओ शहर में दाखिल हो जाओ और जो चाहो वह खाओ. चुनांचे कुछ को छोड़ कर बाकी सब अल्लाह के हुकुम के खिलाफ रहे जो लोग आमेलेक शहर पहुँच गए। यहाँ उन्होंने शहर पर कब्ज़ा कर लिया, इसमें ४०००० हज़ार लोग शहीद हुए और अल्लाह का हुकुम था के जब शहर में दाखिल होना तो मुह से **"हित्ततुन" (हत्ता)** कहना। जिसका मतलब था हम **तौबा करते हैं**। लेकिन जब यह लोग शहर में दाखिल होने लगे तो इन्होने मुह से **"हन्ता"** कहना शुरू कर दिया जिसका मतलब **गेहूं** होता है। इस तरह अल्लाह का इनपर अज़ाब नाजिल हुआ और यह ४० साल तक इस जगह पर भटकते रहे आखिर कार जीती हुई हुकूमत इनके हाथ से निकल गई।

सूरेह बकरा की आयत न.६० में उस वक्त का ज़िक्र है जब उनकी कौम में नफसा-नफ्सी फ़ैल गई एक बीमारी की वजह से १२ फिरके बन गए सब अलग-अलग रहना चाहते थे और यह बीमारी पानी की वजह से थी। तो मूसा (अ.स) ने बारगाहे इलाही में दुआ की और तब अल्लाह ने कहा ए मूसा इस पत्थर पर अपना असा मारो चुनांचे आपने असा मारा और पत्थर से बाहर चस्मा फूट पड़ा फिर हर कबिले के सरदार ने अपना अपना चस्मा समझ लिया और पीने लगे।

<u>सूरेह बकरा की आयत न.६२</u> में अल्लाह ने कुछ फिरको के नाम लिए के मुसलमान, यहुदी, इसाई जो भी परहेज़गार होगा उसे आखिरत में बेहतरीन फल मिलेगा। लेकिन साबिई वह कौम थी जो किसी मज़हब को नहीं मानते थे यह तारा परस्त थे और उसी पर ईमान रखते थे।

<u>सूरेह बकरा की आयत न.६३</u> में उस वक्त का ज़िक्र है जब यहूदियों ने कहा के यह तौरेत इतनी भारी किताब है जिसको पढना और अमल करना हमपर भारी पड़ रहा है (तौरेत बहुत मोटी किताब थी जिसका वज़न १० किलो था)। तब अल्लाह ने जिब्राइल अमीन को हुकुम दिया के कोहे-तूर को उठाकर इन पर लटकाओ और आपने ऐसा ही किया। अल्लाह ने कहा के अगर तुमने इस किताब पर अमल नहीं किया तो तौरेत से लाखो गुना बड़ा पहाड़ तुमपर डाल देंगे अगर तुमने इस किताब पर अमल किया और मेरा हुक्म माना तो अजब नहीं के तुम परहेज़गार बन जाओ.

<u>सूरेह बकरा की आयत न.६४ से ६६</u> में अल्लाह पाक ने **<u>दाऊद (अ.स)</u>** के वक्त का ज़िक्र किया है जब यहुदियों पर सनीचर (हफ्ता) के दिन शिकार करने पर अल्लाह ताअला ने पाबन्दी लगा रखी थी। लेकिन इन लोगो ने अल्लाह के हुकुम की नाफ़रमानी करना शुरू कर दी। **इसके तहत यहुदी जुमा के दिन बड़े-बड़े गड्ढे**

खोदा करते थे और नालियाँ बनाकर समुद्र से जोड़ दिया करते थे I पानी के साथ साथ मछलियाँ भी इन गड्ढो में आ जाती थी फिर नालियों को बंद कर देते थे ताकि मछलियाँ गड्ढो में ही रहे और सनीचर के दिन इन्हें खाते थे I यह कहकर के यह शिकार जुमा का है I जब अल्लाह पाक ने इन्हें ज़लील बन्दर बन जाने का हुकुम दिया और यह बन्दर बन गए I फिर अल्लाह पाक ने एक ऐसी जोर दार हवा चलाई के सब के सब उन गड्ढो में जा गिरे और डूब कर मर गए I

सूरेह बकरा की आयत न.६७ से ७५ में एक बैल और कातिल के बारे में ज़िक्र किया है और इसी आयत की वजह से इस सूर का नाम सूरेह बकरा पड़ा I किस्सा यूँ है "एक शक्स जिसका नाम **आमिल** था वह एक खूबसूरत औरत पर फ़िदा था, लिहाज वह शादी करने जा रहा था लेकिन आमिल का चचा ज़ाद भाई भी इसी औरत पर फ़िदा था, जब उसे खबर पड़ी के आमिल उसी औरत से शादी करने जा रहा है तो उसे बरदाश्त नहीं हुआ और रात के अँधेरे में इसने आमिल का क़त्ल कर दिया और अपने कबीले में जा छुपा I सुबह-सुबह जब सभी लोगो ने यह वाकिया देखा तो बहुत परेशान हुए के कहीं कबीलों में आपस में ही जंग ना छिड जाए तब कुछ लोग मूसा (अ.स) के पास गए और कहा हम चाहते हैं के आप इस राज़ को खोले ताकि सही कातिल का पता चल सके" I आपने अल्लाह ताअला से

दुआ की अल्लाह पाक ने वही भेजी के इनसे कहो के एक बैल ज़िबाह करो और बैल का गोश्त मकतूल पर डाल दो वह जिंदा हो जाएगा और क़यामत में हम इसी तरह मुर्दों को जिंदा करेंगे I जब मूसा (अ.स) ने अपनी बात कही तो यह लोग बोले के आप हमसे मज़ाक करते हैं ? I मूसा (अ.स) बोले मैं अल्लाह से पनाह मांगता हूँ अगर यह मज़ाक हो I तब इन लोगो ने कहा आप खुदा से दरियाफ्त करे के यह बैल कैसा हो आपने, जवाब दिया के वह बैल ज़र्द (पीला) रंग का हो I तीसरी बार फिर पूछने आए के अब आप उसके गुण दोष भी बयान कर दें, अल्लाह ने फरमाया ए मूसा इनसे कहो यह बैल ना तो बच्चा हो और ना बूढ़ा ना इसमें कोई ऐब पैर, सिंग, कान, जिस्म में कोई कमी ना हो और नाही किसी काम जैसे खेती वगैराह में जुता ना हो, जब यह सब कुछ मालूम कर चुके तो लगे बैल को ख़ोजने निकले I लेकिन ऐसी खूबियों वाला बैल उन्हें नहीं मिल रहा था I काफी खोज बीन के बाद उन्हें मालूम हुआ के **अब्दुल्लाह** नाम का एक शक्स है जो की ईमान वाला है उसके पास ऐसा बैल मौज़ूद है I यह लोग इस शक्स के पास पहुंचे और बैल को खरीदने को कहा इसपर अब्दुल्लाह ने कहा यह बैल आपको मिल सकता है लेकिन आपको इसकी एक बड़ी रकम चुकानी पड़ेगी I यह लोग बोले हमे मंजूर है आप जितनी मांगोगे हम देंगे I तब अब्दुल्लाह ने जवाब दिया के इस बैल की खाल

को सोने से भर कर देना होगा। चुनांचे इस कबीले के सभी लोगो ने अपना पूरा सोना इकठ्ठा कर के अब्दुल्लाह को दे दिया फिर बैल को ज़िबाह कर के गोश्त का एक टुकड़ा जैसे ही मुर्दे पर मारा वह ज़िंदा हो गया और कातिल व क़त्ल की वजह बयान कर दी। अगर यह लोग सिर्फ बैल के ज़िबाह करने पर तैयार होते तो जो भी बैल की मौज़ूदा कीमत होती देकर अपना काम चला लेते क्युकी इन्होने अल्लाह के हुक्म को मानने में कोताही बरती और अब अल्लाह ताअला ने भी अब्दुल्लाह जो की एक परहेज़गार थे उन्हें माला माल कर दिया अल्लाह परहेज़गारो को ऐसा ही सिला दिया करते हैं।

सूरेह बकरा की आयत न. ७६ से ७९ में उन आलिमो का ज़िक्र किया है जो अपने साथी आलिमो से कहते थे की अगर तुम लोगो ने सही-सही बयान करना शुरू कर दिया तो यह मुसलमान हमपर ग़ालिब हो जाएंगे तौरैत में आखरी नबी के आने का बयान किया था जिसके मुताबिक़ आखरी नबी का रंग गेहुआ, चेहरा गोल, कद दरमियाना (ना तो ज्यादा लम्बा ना छोटा) आंखे काली और बाल घुंगराले होंगे लेकिन आलिमो ने आयत का मतलब बदल डाला और उसके बदले यह कहा की आखरी नबी का रंग बहुत गोरा होगा और आंखे नीली, कद काफी लंबा। जब की यह निशानिया दज्जाल की है तब अल्लाह ताअला ने इन्हें हिदायत

भेजी की थोड़ी रकम के लिए ऐसे गलत काम ना करो नहीं तो जहान्नुम की आग में डाल दिए जाओगे |

<u>सूरेह बकरा की आयत न. ८० से ८२</u> में उस वक्त का ज़िक्र किया है जब बनी इज़राइल ने बछड़े को पूजा था और उसके बाद तौबा कर ली थी और कहते थे की हमारे गुनाहों की सज़ा ४० दिन जहान्नुम की आग है बकिया दिन हम जन्नत में ही गुज़ारेंगे क्युकी जन्नत हमारे लिए ही बनाई गई है तब अल्लाह ताअला ने फरमाया जन्नत सिर्फ परहेज़गारो के लिए ही है |

<u>सूरेह बकरा की आयत न. ८४ से ८६</u> में खुदा ने अपने नबी (स.अ) के खानदान के बारे में बयान किया है और यह तीनो बड़ी एहम आयतें हैं खुदा ने नबी-ए-करीम (स.अ) को गैब बतलाया की उनके नवासो का क्या अंजाम होगा इसी लिए नबी-ए-करीम (स.अ) ने पेशीनगोई की थी अल्लाह ताअला फरमाता है की तुमने कसम खाई थी की मुसलमान-मुसलमान का खून नहीं करेंगे लेकिन तुम खून भी बहाओगे और उनको अपने मुल्क से निकालोगे | अल्लाह पाक अपने हबीब से बातें कर रहे हैं की ऐ रसूल तुम्हारे एहलो-अवाल को दुश्मन निकाल देंगे और एहले हरम को कैद करके जुर्माना (फिदिया) लेकर छोड़ेंगे | उन्हें मुल्क से निकालना तो

सख्त हराम है और इन लोगो को हम (अल्लाह) माफ़ नहीं करेगा इनका ठिकाना जहान्नुम है क़यामत के दिन इन लोगो के साथ कुछ भी रियायत नहीं की जाएगी।

<u>**सूरेह बकरा की आयत न. ८८**</u> में यहूदियों का यह कहना की "हमारे दिल जिरा (कवच) से हिफाज़त में हैं" यहूदियों का कहना था की हमारा दिल पसलियों के पिंजरे से बंद है इस लिए हमारे दिलों पर तौरेत की हिदायतों का असर नहीं होता। यह उनका बहाना था अगर बनी इज़राइल परहेज़गार होते तो ऐसी बातें नहीं करते और इसलिए अल्लाह ने इनपर फिटकार भेजी है।

<u>**सूरेह बकरा की आयत न. ९० से ९१**</u> में अल्लाह पाक ने बनी इज़राइलियों को हिदायत दी यह कुरआन जो मुहम्मद (स.स) पर हमने नाजिल किया है उसपर ईमान लाओ यहूदियों ने कहा की हम सिर्फ तौरेत पर ही ईमान रखते हैं कुरआन पर हमारा ईमान नहीं है तब अल्लाह ने फरमाया ऐ रसूल इनसे पूछो की अगर यह सच्चे हैं तो फिर इन लोगो ने तौरेत के मान्ने वाले पैगम्बरों का नाहक खून क्यों बहाया।

<u>**सूरेह बकरा की आयत न.९३ से ९६**</u> में अल्लाह ताअला रसूल-ए-अकरम (स.अ) से कह रहे हैं की इनसे कहो की अगर आखिरत का घर सिर्फ तुम्हारे लिए

ही है, तो मौत की दुआ क्यों नहीं करते, यह हरगिज़ ऐसा नहीं करेंगे l क्युकी इनके आमाल इतने बदतर हैं की यह कभी नहीं चाहेंगे की वह मरे बल्कि यह सब आदमियों से ज्यादा बड़ी ज़िन्दगी की दुआ करेंगे हत्ता मुशरीको से भी ज्यादा इनमे से हर एक यही चाहता है की हज़ारो साल की उम्र हो और अगर यह इतनी उम्र पा भी जाए तो भी आखिरत के आज़ाब से यह कतई ना बच सकेंगे l

सूरेह बकरा की आयत न.९७ से ९८ में अल्लाह ताअला ने यहूदियों पर सख्त आयतें बयान की l यहुदी लोग जिब्राइल (अ.स), मिकाईल (अ.स) से बहुत खफा थे और उन्हें अपना कट्टर दुश्मन समझते थे l **जिब्राइल** का मतलब होता है **गुलाम-ए-खुदा** और **मीकाईल** का मतलब होता है **खिदमत-ए-खुदा** यह दोनों फ़रिश्ते अल्लाह के हुक्म के मोहताज़ है l जो अल्लाह का हुकुम होता है वही करते हैं l और इसी हुकुम के तहत जिब्राइल (अ.स) ने कोहे तूर को उठाकर यहूदियों पर लटका दिया था l जिसके खौफ से यहुदी तौरेत की पैरवी करते थे और अब जो मौज़ूदा किताब कुरआन है l इसे भी जिब्राइल (अ.स) ले कर आए और ताकीद की इसपर अमल करो l इस तरह यहुदी आपको अपना कट्टर दुश्मन कहते थे फिर अल्लाह ने फ़रमाया की जो मेरा दुश्मन, मेरे पैगम्बरों का दुश्मन और फरिश्तो का दुश्मन तो ऐसो का दुश्मन मैं (अल्लाह) हूँ l

<u>सूरेह बकरा की आयत न. ९९ से १०१</u> इन आयातों में अल्लाह ताअला अपने हबीब से फरमा रहा हैं की यह लोग (यहुदी) इसके पहले तौरेत की पेशीनगोइ को झूठला चुके हैं और अब इस कुरआन को नज़र-अंदाज़ करना चाहते हैं। जब की यह कुरआन तौरेत की तस्दीक करता है यह ज्यादा तर ईमान लाने वाले नहीं हैं। इनका ठिकाना जहान्नुम है।

<u>सूरेह बकरा की आयत न.१०२ से १०३</u> में अल्लाह ने सुलेमान (अ.स) के वाक़िए का ज़िक्र किया जब की सुलेमान (अ.स) दुनिया से पर्दा कर गए. तो शैतान इब्लीस ने एक पर्चे पर जादू के कुछ मंतर लिख कर आपके तख़्त के नीचे छुपा दिया, फिर इंसानी शक्लो में हाज़िर हो कर कहा की सुलेमान कोई पैगम्बर नहीं थे वह तो जादू का कमाल था. जिसके वजह से सुलेमान का तख़्त हवा में उड़ा करता था और देव और जिन्न, शैतान उनके हुक्म के गुलाम थे, सो जादू के जोर पर वह ऐसा करते थे और उस तख़्त से पर्चा निकाल कर लोगो को दिखा कर गुमराह करने लगा और यह कहता की सुलेमान (अ.स) का वजीर **आसिफ बिन बरकिया** जादूगर था। अल्लाह पाक ने दो फरिश्तो को इंसानी शक्लो में उतारा जिसमे एक का नाम हारूत, और दुसरे का नाम मारूत। इन दोनों ने लोगो को बयान करना शुरू किया की जादू हराम है यह औरत और मर्द में जुदाई पैदा करता है तुम जादू सीख

कर काफिर ना हो जाना | फिर शैतान ने इन दोनों फरिश्तो पर यह इलज़ाम लगाया की इन लोगो ने ज़ोहरा नाम की एक औरत की इज्ज़त लूटी है | जब के यह एक बद-चलन औरत थी | लोगो में ऐसी अफवह फैलाई गई | आखिर कार इस औरत ने इनकार किया और अल्लाह पाक ने इसके नाम का एक सितारा बुलंद किया जिसका नाम **ज़ोहरा** है और साइंसदां इसे तस्लीम कर चुके हैं |

सूरेह बकरा की आयत न. १०४ से १०५ में अल्लाह ने यहूदियों का वह ज़िक्र किया जब यह लोग रसूल (स.अ) की महफ़िल में मौज़ूद रहते थे तो बराबर कहते थे **"राइना"** जिसका मतलब होता है **"चरवाहा"**. इन लोगो का देखि देखा ईमान वाले भी राइना कहते थे जब की इन्हें इसका मतलब नहीं मालूम था. तब यह आयत उतरी "ऐ ईमान वालो रसूल को **"अनर्जुना"** कहो जिसका मतलब **"अच्छा"** है" |

सूरेह बकरा की आयत न.११४ से ११५ में मुहायदे हुबैदिया का ज़िक्र है | जब रसूल (स.अ) ने मुशरिको की सभी शर्तें मान ली थी यहाँ तक की खाना-ए-काबा में एक साल की आने की मनाई थी और अगर कोई काफिर ईमान वाले कबीलों में बस जाए तो उसे वापस करना होता | ताकि वह ईमान ना ला सके और अगर ईमान वाला उनके (मुशरिको) के खेमो में पहुँच जाए तो उसे वापस नहीं

किया जाएगा I इस मुहायदे हुबैदिया के कारण कुछ सहाबा नबी-ए-करीम (स.अ) के खिलाफ भी हो गए I लेकिन आपने यही कहा के यह मुहायदा ज़रूर सबको फायदा पहुंचाएगा और आखिर कार ऐसा ही हुआ I मुशरिको ने एक-एक कर अपनी सभी शर्ते वापस ले ली और मुहायदा पूरी तरह से ईमान वालो के हक़ में हो गया, जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए और उसके बताए हुए रास्ते पर चले यही परहेज़गारी की राह है I

सूरेह बकरा की आयत न. १२४ में "जब इब्राहीम (अ.स) को उनके परवरदिगार ने चन्द बातो में आज़माया और इब्राहीम (अ.स) ने उन बातो को पूरा कर दिखाया I कहा की हम (अल्लाह) तुम को लोगो का इमाम बनाएंगे, आपने इल्तिजा की के मेरी औलाद में से भी और कहा मगर मेरे इकरार में वह दाखिल नहीं जो नाफरमान होंगे" I

ऊपर की आयातों में चन्द बातो का ज़िक्र है तो वह चन्द बातें क्या है जो इब्राहीम (अ.स) ने पूरी की और अल्लाह ने आपको कौम का इमाम मुक़र्रर किया I इब्राहीम (अ.स) के वक्त में लोगो में जिस्म को पाक और सही रखने का रिवाज़ ना था. इन लोगो के बाल इतने बड़े हो जाते थे की चोटी का चलन था, मूछों के बाल खाने और पीने में डूब जाते थे, खतना नहीं करवाते थे, शर्मगाहो के बाल बड़े-बड़े

रहते थे। चुनांचे अल्लाह ताअला ने आपको ताकीद की तो आपने अपनी कौम पर यह शर्तें मुसल्लत करदी और यह लोग अपने सर के बाल कटवाते, मुछे मुंडवाते, पैर और हाथ के नाखून कटवाते, शर्मगाह के बाल कटवाते, और खतना करवाते थे। तब अल्लाह ताअला ने आपको पहले बंदा कहा फिर नबी के दर्जे से नवाज़ा। इसके बाद रसूल बनाया फिर आपको **खलीलउल्ला** के लकब से नवाज़ा और आखिर में कौम का इमाम बनाया। आपने दुआ की मेरी औलाद से भी इमाम बना तब अल्लाह पाक ने फ़रमाया की मैं ना फरमानों में से किसी को इमाम नहीं बनाउंगा बल्कि फर्माबरदार में से इमाम बनाउंगा।

सूरेह बकरा की आयत न.१२८ से १२९ में अल्लाह ताअला ने इब्राहीम (अ.स) और इस्माइल (अ.स) का ज़िक्र किया है। जब की वह दोनों काबे की दीवारे उठा रहे थे तो अल्लाह से दुआ मांग रहे थे "या अल्लाह हमारी मेहनत को क़ुबूल फरमा इस शहर मक्का को अमन का शहर बना, यहाँ के रहने वालो को हर तरह की नेमतो से माला माल कर दे, बेशक तू ही सुनने और जान्ने वाला है। ऐ मेरे परवरदिगार तू मेरी उम्मत से एक गिरोह पैदा कर जो मेरे हुकुम पर चलने वाला हो और इसी में से एक पैगम्बर पैदा कर जो तेरे कलामो को पढ़ कर सुनाए और कुरआन और इल्म से उन्हें लबरेज़ करे"। हज़रत इब्राहीम (अ.स) ने यह दुआ की

तो अल्लाह पाक ने हज़रत इस्माइल (अ.स) को पैगम्बर बनाया और अब जब हज़रत इस्माइल (अ.स) यह दुआ कर रहे हैं तो अल्लाह पाक ने आप की दुआ सुनी और मुहम्मद (स.अ) को भी आखरी नबी और रसूल और सरदारे पैगम्बर चुना इसके अलावा हज़रत इसहाक (अ.स) और हज़रत इस्माइल (अ.स) के फिरको में साफ़ बटवारा हो गया। हज़रत इसहाक (अ.स) की कौम में यहुदी, नस्रानियो का फिरका बढ़ता गया जब हज़रत इस्माइल (अ.स) की दुआ अल्लाह पाक ने क़ुबूल कर ली और ईमान वालो को इस कौम में पैदा किया जब की हर पैगम्बर की यह तमन्ना थी की आखरी नबी अल्लाह हमारी औलाद में से ही चुने लेकिन अल्लाह ताअला ने हज़रत इस्माइल (अ.स) की औलादों में सिर्फ नबी-ए-करीम (स.अ) को चुना। ना उनके आगे कोई पैगम्बर बना और ना उनके बाद ही। दूसरे नज़रिये से देखा जाए तो हज़रत इस्माइल (अ.स) को अल्लाह ने कुर्बान होने वालो में चुना। तो मुहम्मद (स.अ) को कुर्बानी देने वालो में चुना यानी कुर्बानी वाली कौम यही बनी बकिया किसी दूसरी कौम में कुर्बानी का इम्तिहान नहीं हुआ सिवाए आले इस्माइल (अ.स) से लेकर आले रसूल (स.अ) तक. रसूल ने अपने नवासे की कुरबानी दी थी।

<u>सूरेह बकरा की आयत न. १३० से १३५</u> में अल्लाह ताअला ने इब्राहीम (अ.स) की पूरी कौम का ज़िक्र किया के सभी ईमान वालो में से हुए इब्राहीम (अ.स), इस्माइल (अ.स), इसहाक (अ.स), याकूब (अस.) सभी ने दीन-ए-इस्लाम की पैरवी की और उसी एक खुदा की इबादत की। अल्लाह ताअला ने मज़हब-ए-इस्लाम को अकल्मंदो का मज़हब कहा और जब की यहुदी और नसारा के मजहबो को अहमको का मज़हब कहा। अल्लाह ताअला ने यहाँ पर यहूदियों का फिर ज़िक्र किया है और कहा "ऐ लोगो तुम्हारे गए गुज़रे लोगो की गलतियों का बदला तुमसे नहीं लिया जाएगा उनके गुनाह का बदला उनसे ही लिया जाएगा"।

<u>सूरेह बकरा की आयत न. १३८</u> में परहेज़गारी का कितना अच्छा ज़िक्र किया गया है की कहो हम तो अल्लाह के रंग में रंग गए हैं। इसका मतलब है परहेज़गारी। अब हम अल्लाह के ही हो गए हैं अब हमे किसी दूसरे "ईलाह" की ज़रूरत नहीं उस दौर और आजके दौर में भी इसाई लोगो के घर में जब बच्चा पैदा होता है तो उस बच्चे को ज़र्द रंग में नेहलाते हैं। क्युकी ज़र्द रंग सुभ समझा जाता है और कहते हैं की अब हमारी औलाद इस रंग में रंग चुकी है और अब उसे किसी दूसरे रंग की ज़रूरत नहीं है उसपर यह आयत उतरी।

<u>सूरेह बकरा की आयत न. १४४ से १४८</u> में अल्लाह ताअला ने उस वक्त यानी २ हिजरी १५ रज्जब का ज़िक्र किया जब आप सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम मस्जिद-ए-कुबा में नमाज़-ए-जोहर अदा कर रहे थे और २ रकात पूरी कर चुकने के बाद वही आई ऐ पैगम्बर अब अपना मुह खान-ए-काबा की तरफ कर लो। आपने फ़ौरन अपना मुह खाना-ए-काबा की तरफ कर लिया और आपके सहाबियों और कुछ लोगो को छोड़ कर बकिया लोगो ने अपना मुह बैतूल मुक़द्दस की तरफ ही रखा। अब यहाँ पर अल्लाह ने रसूल (स.अ) पर ईमान रखने वालो की फिर आज़माइश की। कौन रसूल (स.अ) पर पूरी तरह से ईमान रखता है। जैसे की पहली बार जब अल्लाह ताअला ने रसूल (स.अ) को हिज़रत का हुकुम दिया और आप मदीने की तरफ रवाना हो गए और हुक्म भेजा की अब तुम्हारा किबला बैतूल मुक़द्दस है। यह लोगो के लिए पहली आज़माइश थी जो भी रसूल का और अल्लाह का मान्ने वाला था उसने इसपर अमल किया और मुसलमान कहलाया और जिसने इसपर अमल नहीं किया वह मुशरिक कहलाया, अल्लाह ताअला सबके दिलो के राज़ जान्ने वाला है। वह रसूल (स.अ) के दिल की बात जान चुका था, के उसके हबीब को मक्का का खाना-ए-काबा बहुत पसंद है और अल्लाह अपने हबीब की ख्वाहिश को पूरी करना चाहता था। इस लिए अल्लाह पाक ने

हुकुम भेज दिया की अब तुम्हारा किबला काबा है और तुम कहीं भी हो अपना मुह काबे की तरफ कर लिया करो क्युकी हर मुल्क के काबे की सिम्त अलग-अलग हुआ करती है, जैसे की हिन्दुस्तान के रहने वालो के लिए सिम्त पष्चिम है और अमेरिका में रहने वालो की सिम्त पुरव है। इस बात का भी खुलासा किया गया है की पुरव और पष्चिम, खुदा तो हर जगह मौज़ूद है, लेकिन अल्लाह सबको एक जगह पर ही इकठ्ठा करना चाहता है। इसलिए उसने काबे को चुना और यह वह जगह है जो इस दुनिया के बीचो-बीच मौज़ूद है, ताकि लोग जब नमाज़ के लिए खड़े हों तो पूरी दुनिया के लोग एक गोलाकार शक्ल अख्तियार किए हों और काबा इनके बीच में रहे और ऐसा ही है।

सूरेह बकरा की आयत न. १५३ से १५७ में करबला का ज़िक्र है अल्लाह अपने रसूल को कह रहा है कि अपनी उम्मत और अपने एहलो अवाल तक पैगाम पहुंचाए बल्कि आने वाले दौर के लिए दिमागी तौर पर तैयार भी किया के रोज़े (सब्र), और नमाज़ तुम्हारा हथियार है और जो भी राहे खुदा में मारे जाए वह ज़िंदा है। और हम उन्हें रिज़क मुहैया करते हैं। हम परहेज़गारो को थोड़े डर, भूख और माल,जान और पैदावार से आज़माते हैं, के कहीं वह इन हालातो के आने पर ईमान से भटक तो नहीं जाएंगे और जंग-ए-करबला में यह हालात बन गए जब की पानी

भी नसीब नहीं हुआ कई दिन तक भूखे रहे माल असबाब सब लुट गया लेकिन ईमान के रास्ते पर चलते हुए शहीद हों गए लेकिन उफ़ तक नहीं किया | जिस तरह अल्लाह ने इन आयातों में ज़िक्र किया बिलकुल वही मंजर करबला की जंग में पेश आया | तभी तो आप सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम अपने नवासे को देख कर रोते थे क्युकी आपको इन का अंजाम इन आयातों से मालूम पड़ चुका था |

<u>सूरेह बकरा की आयत न. १५८</u> में अल्लाह ने **सफा** और **मरवा** के बीच फेरे करने में कुछ गुनाह नहीं जब के यह हज़रत हाजरा की सुन्नत है उस वक्त सफा पहाड़ और मरवा पहाड़ के बीच में मुशरिको ने बुत रख दिए थे तो जब हज व उमरा के दौरान फेरे लेते थे | तो मुशरिको का कहना था की यह फेरे तो हमारे बुतों के करते हैं जब की ये जानते हैं मज़हब-ए-इस्लाम नियत पर मुसल्लत है | लिहाज़ा तुम गुनाह नहीं कर रहे हो क्युकी तुम्हारी नियत सुन्नत-ए-हज़रत हाजरा की है | ना की इन पत्थरो के बुतों की तवाफ़ करने की |

<u>सूरेह बकरा की आयत न. १६० से १६१</u> में अल्लाह ने उन लोगो पर लानत भेजी है जो किताब (तौरेत) की हिदायत पर नहीं चलते और किताब की आयातों को छुपाते हैं लानत का मतलब कोई गाली गलोच नहीं बल्कि इसका मतलब है अल्लाह की रहमत से दूर रहे यहाँ पर एक बात और साफ़ कर दें की दो काम ऐसे

हैं जो अल्लाह और बन्दे साथ साथ करते हैं जैसे अल्लाह नाफरमानो पर लानत भेजता है और अपने हबीब पर दरूद भेजता है और बन्दे भी यही काम साथ-साथ करते हैं।

<u>**सूरेह बकरा की आयत न.१७३**</u> में अल्लाह पाक ने फरमाया के मरा हुआ जानवर, खून और सूअर का गोश्त और जिसको अल्लाह के सिवाए किसी और के लिए चढ़ाया जाए तुम पर हराम है। लेकिन जो मजबूर है भूक से लेकिन ना फरमान नहीं तो उनपर गुनाह नहीं।

इस आयत में बिलकुल साफ़ है के जान बचाने के लिए कोई दूसरा रास्ता नहीं है तो इसे खा सकते हैं। अब इस आयत में गैरउल्ला के नाम का ज़िक्र है जिस पर कई आलिमो ने यहाँ तक मतलब निकाला की अगर किसी वली या इमाम या पैगम्बर की नियाज़ दी गई तो वह भी गैरूल्ला ही हुआ। जब की हम जानते हैं की नियाज़ में बिस्मिल्लाह के बाद अल्लाह की भेजी हुई आयातों को पढ़ा जाता है और फिर अल्लाह ताअला से उसकी मगफिरत की दुआ और सवाब की दरख्वास्त होती है। लिहाज़ा इसको गैरूल्ला के नाम का कहना गलत और आयत का मतलब ना समझना जैसी बात है। जब अल्लाह ने अपने घर खाना-ए-काबा के हज का हुक्म दिया और कहा सुन्नत-ए-इब्राहीमा के तौर पर कुर्बानी पेश करो तो ईमान

वालो ने कुरबानिया पेश करनी शुरू कर दी, इसका देखा देखि मुशरिको ने कहा हम भी काबे में मौज़ूद बुत जैसे "मनात, लात, हुब्बल, उज्जा" जैसे भगवानो के नाम पर बली चढ़ाया करेंगे और इन लोगो ने यह काम शुरू कर दिया और जानवरों को लिटा कर झटके से एक ही वार में अपने देवता जैसे "हुब्बल देवता, मेरी बली स्वीकार करो" यह कह कर एक ही वार में गर्दन धड से अलग कर दिया करते थे. फिर उसके गोश्त को काट काट कर लोगो में तकसीम किया करते थे यहाँ तक इसका बहता खून पीते थे l तब अल्लाह ताअला ने यह आयत उतारी के गैरुल्ला के नाम का खाना हराम है l

<u>सूरेह बकरा की आयत न.१७७</u> में परहेज़गारी के बारे में खुल कर बयान किया है अल्लाह फरमाता है की क्या तुम पांच वक्त अपना मुह किबला की तरफ खड़े हो जाओ तो बस तुम ने भलाई कर दी और परहेज़गार बन गए l नहीं-नहीं परहेज़गारी तो यह है की अल्लाह पर यकीन रखते हुए आखिरत की तैयारी की जाए, फ़रिश्ते जिब्राइल के ज़रिये भेजी गई सभी आसमानी किताबो की पैरवी और पैगम्बरों पर ईमान लाए l अल्लाह से जो मुहब्बत करते हैं वह अपने रिश्तेदारों की हर तरह से मदद करते हैं, मोहताजो और यतीमो का सहारा बनते हैं मुसाफिरों की मदद करते हैं और गुलामो पर माल खर्च करके आज़ाद कराया करते हैं l ऐसे लोग

परहेज़गार कहलाते हैं l नाकि नमाज़ और रोज़ा रख लिया क्युकी अल्लाह का डर है, की जहान्नुम में ना डाला जाऊं, बकिया फरज़ो को नहीं करते यानी गरीबो और मोहताजो की मदद नहीं करते l यह सच्चे मुसलमान नहीं है बलके परहेज़गारी करने वाला ही सच्चा मुसलमान कहलाता है और यह लोग बहिस्त के बागो में ऐश करेंगे l

सूरेह बकरा की आयत न.१८३ में फिर परहेज़गार का ज़िक्र किया गया है l की रमज़ान के महीने में जो चन्द रोज़े (सब्र) है वह फ़र्ज़ है लेकिन वह जो सेहत के नज़रिए से मजबूर है यानी वह खड़े होकर नमाज़ नहीं पढ़ सकते, यानी जिनमे कुवत ही ना हो, या फिर किसी बीमारी में मुब्तिला हो या मुसाफिर हो जिसे वक्त का ख़याल ही ना होता हो की कब सूरज निकलता और डूबता हो l तो ऐसे लोगो पर रोज़े की छूट है l लेकिन जब सेहत मंद हो या सफ़र पूरा कर चुके तो छूटे हुए रोज़े पूरे करें लेकिन जो सेहत से मजबूर है तो उनके लिए यह ज़रूरी नहीं l रोज़े अल्लाह ताअला का हुक्म है l इसलिए हमे हर हाल में हुक्म-ए-इलाही मानना है और अल्लाह जिस बात का हुक्म दे तो वह इंसानों के फायदे के लिए ही होगा l उसी तरह रमज़ान का महीना एक ऐसा महीना जिसमें अगर दिन में यानी सूरज निकलने से डूबने तक का वक्त ऐसा होता है जो के ना दिखने वाले कीड़े से भरा

रहता है और अगर हम इस दरमियान भोजन वगैरह करते हैं तो यह ना दिखने वाले कीड़े भोजन के साथ हमारे जिस्म में पहुंच कर बीमारी पैदा करते हैं। लेकिन सूरज डूबने के साथ ही इनकी मौत हो जाती है और उसके बाद यानी सूरज डूबने के बाद जब हम खाते हैं तो यह ख़त्म हो चुके होते हैं। लिहाज नुक्सान की कोई गूंजाइश नहीं रहती। अगर आपने गौर किया हो तो इस महीने में खाना खाने के बाद जिस्म भारी रहता है कमज़ोरी महसूस रहती है। रमज़ान के रोज़े की जगह पर फिदिया बीमार और कमज़ोर के लिए मुक़र्रर है, ना के हट्टे खट्टो के लिए।

सूरेह बकरा की आयत न.१८६ से १८७ में अल्लाह ने यह आयत उस वक्त उतारी जब की रमज़ान के महीने में लोग अपनी बीवियों से हम-बिस्तरी सिर्फ मगरिब से इशा के दरमियान ही कर सकते थे और यह दस्तूर चला आ रहा था। लेकिन एक बार एक सहाबी ने नबी से कहा मैं परहेज़गार नहीं हो सका आपने पुछा कैसे तो सहाबी बोले या रसूल अल्लाह (स.अ) हम बहुत थके थे और अपनी जौजा के पास सो रहे थे मैंने इशा के बाद हम-बिस्तरी कर ली तो यह तो सहाबी थे और अपने रसूल से अपनी गलती का इकरार कर लिया इसके अलावा और बहुत से लोग भी चोरी छुपे रातो में हम-बिस्तरी करते थे। तब अल्लाह ताअला ने यह आयत उतारी और लोगो की रोज़ो की रातो में अपनी बीवी से हम-बिस्तरी का

हुक्म दिया और कहा के जो मेरी बंधी हुई हदों पर अमल करेगा तो शायद वह परहेज़गार बन जाए।

<u>**सूरेह बकरा की आयत न.१८९**</u> में फिर परहेज़गारी का ज़िक्र किया इस आयत में एक कयास यह है की लोग सहबियो की नजरो से बच कर नबी-ए-करीम (स.अ) से मिला करते थे। तब आपने कहा "मैं शहर हूँ और सहाबी शहर में दाखिल होने वालो के लिए दरवाज़े हैं"। लिहाज़ा आप लोग दरवाजों से होते हुए शहर में ऐसे दाखिल हो, ना की पीछे के रास्तो से सेंध लगाकर हम तक पहुंचे। जो मुझसे मिलना चाहता है वह मेरे सहबियो के सामने मिले इसके अलावा हज के दरमियान लोग एराम बाँध कर निकल जाया करते थे और वक्त ए ज़रूरत पर घर वापस आने के लिए दीवार को तोड़ कर घुसते थे क्युकी अगर एक बार हज के लिए निकल गए तो जब तक हज पूरा ना हो जाए उसी दरवाज़े से आना मन था। लिहाज़ा लोगो ने सेंध लगाने वाला रास्ता इख्तियार किया। तब अल्लाह ताअला ने यह आयत उतारी और लोगो को परहेज़गार बन्ने की हिदायत दी।

<u>**सूरेह बकरा की आयत न. १९१ से १९९**</u> तक में अल्लाह ने बदला लेने का ज़िक्र किया है। लेकिन हद से बढ़ने की मनाई भी की है, अगर हम इस पर कायम रहे तो अल्लाह हमे परहेज़गारो में शरीक करेगा और जिन का ठिकाना जन्नत है।

अल्लाह ने मस्जिद-ए-हराम की जगह पर लड़ना मना किया है लेकिन इस आयत में यहाँ पर भी जंग कर सकते हैं l लेकिन जब दुश्मन यहाँ तुमपर हमला करे तो ऐसा नहीं के आपका दुश्मन यहाँ दिख जाए तो आप उसपर हमला कर दें l अगर ऐसा किया तो गुनाह गारो में दाखिल हो जाएंगे l मस्जिद-ए-हराम क्या है ? l मस्जिद-ए-हराम हातिम की जगह को कहते हैं, यह वह जगह है जहां पर इब्राहीम (अ.स) और इस्माइल (अ.स) खड़े हुआ करते थे इसके अलावा नबी-ए-करीम (स.अ) भी इसी जगह पर खड़े होकर नमाज़ पढ़ते थे इस सिम्त में बुत नहीं रखते थे अल्लाह पाक ने इन खुसूसियत की वजह से इस जगह पर खून का गिरना हराम कर दिया l यहाँ तक अगर इस जगह पर कोई चीज़ पड़ी मिले तो उसको उठाना भी हराम है l इस चीज़ को जमा करवा देनी चाहिए, लेकिन अगर मस्जिद-ए-हराम की जगह पर काफिर हमला कर दे तो अब तुम पर फ़र्ज़ बनता है की तुम भी हमला करो उनका खून बहाओ यहाँ तक की उन्हें नेस्त-ओ-नाबूद कर दो यह तुम्हारे लिए बेहतर है, लेकिन ज़ालिमो के अलावा किसी का खून बहाना तुम्हे जाइज़ नहीं l जितनी ज्यादती उसने तुम्हारे साथ की तुम भी उतनी ही ज्यादती करो लेकिन उससे ज्यादा नहीं और यह मत भूलना की अल्लाह नाफरमानो को पसंद नहीं करता और अल्लाह परहेज़गारो का दोस्त है l

<u>सूरेह बकरा की आयत न.२०० से २०३</u> में अल्लाह ने फरमाया की जब हज के सारे अराकान पूरे कर लो तो अल्लाह को कसरत से याद करो. पहले लोग हज पूरा करने के बाद अल्लाह की याद से गाफिल हो कर अपने पुरखो की तारीफे करते थे की हमारे बाप दादा कितने आला थे उनकी शान व शौकत थी और यह दुआ करते थे या अल्लाह हमे इस दुनिया में नामवर कर. तब यह आयत उतरी के हज के बाद अल्लाह को बेहद याद करो। यहाँ तक की अपने पुरखो से भी ज़्यादा अगर तुम ने दुनिया की खुशहाली मांग ली तो तुम्हें आखिरत में कुछ भी नहीं मिलेगा। क्युकी आखिरत का घर परहेज़गारो के लिए है और परहेज़गार जब दुआ मांगता है तो दुनिया और आखिरत की भलाई की दुआ करता है और जहान्नुम की आग से पनाह मांगता है। अगर कोई शक्स हज के अराकान पूरा करके जल्द वापस आना चाहे तो उसपर गुनाह नहीं और जो ज्यादा दिन रह जाए तो उस पर भी कोई गुनाह नहीं, लेकिन यह परहेज़गारो के लिए है।

<u>सूरेह बकरा की आयत न. २१२</u> में अल्लाह ने फरमाया के क़यामत के रोज़ परहेज़गारो के दरजे सबसे आला होंगे. और वह जो खुदा की ज़ात से इनकार करते हैं और दुनिया की झूटी आराइशों में खोए हुए हैं और ईमान वालो की हंसी उड़ाते

हैं इनका ठिकाना दोज़क है और उस दिन इनको समझ में आ जाएगा की परहेज़गारो की शान व शौकत इन नाफरमान के मुकाबले कितनी उम्दा है।

<u>**सूरेह बकरा की आयत न.२२२ से २२९**</u> में अल्लाह पाक ने औरतो की नापाकी का बयान किया है क्युकी अक्सर आप सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से पूछा गया के यह हैज़ क्या है और इस दौरान हम बिस्तरी करना क्यों मना है। तब अल्लाह ने यह आयत उतारी के हैज़ एक गंदगी है इस दौरान तमाम तरह की बीमारियां गंदगी की शक्ल में बाहर निकलती है, अगर इस दौरान तुमने हम बिस्तरी की तो यह बीमारियां मरदों को लग जाएगी जो की बहुत नुकसान देगी। इस लिए तुम इनके पास मत जाओ और जब यह पाक साफ़ हो लेती हो तो अब तुम्हारी बीवियां तुहमे हलाल है। यह तुम्हारी खेतियो की मानिंद हैं। जैसे की हम जानते हैं के हर किसान की अपनी ज़मीन होती है सभी ज़मीने एक तरह की नहीं होती, उसी तरह हर औरत की शर्म गाह की हदें भी एक तरह की नहीं होती। अब अगर किसी शक्स की ४ बीवियां हैं तो उनके हदें तक आला डालने में अलग-अलग तरीके होंगे, उठकर, बैठ कर, लेट कर, तिरछी, वगैरह-वगैरह। और अपनी खेती के बारे में किसान को ही बेहतर मालूम होता है किस तरह हल चलाए ताकि बीज बेकार ना जाए कुछ लोग अपनी जौजा के बैतुल खला के मुकाम में

आला डालते हैं जो की मना है क्युकी किसान कभी भी अपने बीज को बंजर ज़मीन में नहीं डालता ऐसा करने से आला हिल जाता है और बिमारी में मुब्तिला हो जाता है I अगर तुम अच्छे सुलूक करने वाले हो परहेज़गारी पर चल रहे हो तो अगर तुम्हारे सामने सुलाह सफाई की बात आ जाए तो बहाने मत करना बलके उसमें फैसला करना तुम्हारे लिए बेहतर है I अगर तुमने ऐसा किया तो खुदा सब सुनता और जानता है I लिहाज़ा तुम उन लोगो में सही फैसला करो और उनकी दोस्ती करवा दो यह अल्लाह का हुक्म है I

सूरेह बकरा की आयत न.२३७ में उस दौर का ज़िक्र है जब अक्सर मेहर की बात निकाह करने के बाद तय होती थी लेकिन कुछ ऐसी शिकायतें नबी-ए-करीम (स.अ) को मिली तो अल्लाह ताअला ने निकाह के पहले ही मेहर तय करने की शरियत बना दी है. ताकी इन फ़िज़ूल झगडों से बचा जाए क्युकी इसमें औरत के पंच जो रकम मांगते थे तो मर्द वाले पंच या खुद मर्द उतनी रकम नहीं दे पाता था I तो इससे दोनों फिरको में लड़ाई झगडो की नौबत आ जाती थी I चुनांचे तब यह आयत उतरी फिर एक और मसला पेश आया की मेहर तय हो गया लेकिन मर्द ने औरत से हमबिस्तरी करने के पहले ही तलाक दे दी तो अब क्या ऐसी औरत को मेहर देना चाहिए ? I जब यह मसले पैदा होने लगे तो अल्लाह ताअला ने फिर

<u>आयत न.२३७ सूरेह बकरा</u> में उतारी की "अगर तुम मेहर ठहरा चुके हो और तुमने हमबिस्तरी किए बिना ही तलाक दे दी है I तो उस हालात में तय मेहर का आधा हिस्सा दे दिया करो अगर औरत खुद अपना हिस्सा माफ़ कर दे तो इसमें हर्ज़ नहीं I या अगर मर्द चाहे तो पूरा मेहर अदा कर दे इसमें भी कोई गुनाह नहीं I और अगर मर्द ऐसा करता है तो यह परहेज़गारी की बेहतरीन मिसाल है और अल्लाह ऐसे परहेज़गार के ज़्यादा करीब है I

<u>सूरेह बकरा की आयत न.२४१</u> में अल्लाह पाक ने परहेज़गार को फ़र्ज़ बताया देखिए और जिन औरतो को तलाक की जाए इनके साथ (मेहर के अलावा) दस्तूर के मुताबिक (जोड़े वगैरह से कुछ) सुलूक परहेज़गारो का फ़र्ज़ है I

इस आयत में अल्लाह पाक ने औरत के लिए रिआयतें और नरमी का इज़हार किया है और यह हर ईमान वालो को समझना चाहिए की उसे अपनी जौज़ा के साथ नरम रवैया अपनाना चाहिए अगर आपने अपनी बीवी को तलाक दे दी तो उसके ज़रियाए माश किस तरह होगा अगर औरत के वालदैन गुजर चुके हैं तो उसका ठिकाना क्या होगा औरत तीन हैज़ तक तो दूसरा निकाह नहीं कर सकती, लेकिन उसके बाद वह आज़ाद है किसी दुसरे ईमान वाले से शादी कर सकती है, लेकिन इसकी क्या गारंटी की तलाक शुदा औरत का निकाह फ़ौरन हो जाएगा तो

ऐसी हालत में अल्लाह ताअला फरमाते हैं उसके गुज़र बशर के लिए मेहर के अलावा अपनी हैसियत के मुताबिक़ जहां तक हो सके तो मकान कपड़ा और अनाज वगैरह भी मुहैया करा दें ताकि साल, ६ महीने तक उसे परेशानी ना पेश आए और जो लोग इस तरह की नर्म दिली का इज़हार करते हैं वह अल्लाह के बेहद करीब है और परहेज़गार ऐसा करना अपना फ़र्ज़ समझते हैं अल्लाह हम सबको परहेज़गार बनाए (आमीन) I

<u>सूरेह आले-इमरान की आयत न.३१</u> को देखिए (ऐ पैगम्बर इन लोगो से) कह दो की अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो ताकि अल्लाह भी तुमसे मुहब्बत रखे और तुम्हारे गुन्हा माफ़ कर दे और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला है बड़ा मेहरबान है I

इस आयत में अल्लाह ने उन लोगो को जो की रसूल अल्लाह (स.अ) के फैसलों पर उंगलियां उठाया करते थे जैसे की **<u>"मुहायदा-ए-उबैदिया"</u>** में कुछ लोग अपना आपा खो बैठे थे और कहते थे की माज़ अल्लाह आपके पैगम्बर होने में शक है I उस वक्त अल्लाह ने यह आयत उतारी की जो मुझसे यानी अल्लाह से मुहब्बत का दवा करते हैं तो उसको साबित करने के लिए मुहम्मद (स.अ) की पैरवी करो I यानी उनकी शरियतो, सुन्नतो पर अमल नहीं करेगा तो वह मेरा

मुनकिर हुआ और इनका ठिकाना जहान्नुम है और जिन लोगो ने रसूल अल्लाह (स.अ) के बताए रास्ते पर अमल किया और उनकी सुन्नतो को अपनाया उनके फैसलों को हुकुम समझा और उसपर कायम रहे तो ऐसे लोग परहेज़गार हुए हम इनके किए हुए गुनाहों को माफ़ कर देंगे, उनके लिए बड़ी कामयाबी है और ऐसे ही लोग मेरे करीब है l

अल्लाह इस कुरआन का हाकिम है और हर आयत उसने ही उतारी और लोगो के लिए आसानिया की l लेकिन जब अल्लाह के रसूल मुहम्मद (स.अ) पर सूरेह बकरा की जब आखरी आयत यानी आयत न.२८५ पूरी हुई तो अल्लाह ने अपने हबीब की यह दुआ " **ऐ हमारे परवरदिगार अगर हमसे (अनजाने में भूल हो या चूक हो जाए तो हमको ना पकड़, ऐ हमारे परवरदिगार, जो लोग हमसे पहले गुजरे हैं उनपर तूने जैसा (बोझ) डाला था वैसा भारी बोझ (कसौटी) हम पर ना डाल, ऐ हमारे परवरदिगार जितना बोझ उठाने की हमे ताकत नहीं है उसे हमसे ना उठवा और हमको माफ़ कर दे और हमारे गुनाहों को बक्श दे और हम पर रहम कर तू ही हमारा काम बनाने वाला है, सो हमे काफ़िरो पर गलबा दे"** l

अल्लाह ने नबी (स.अ) की इस दुआ को इस कलाम-ए-पाक में जगह देकर यह साबित किया की हमारा रसूल (स.अ) जो कह रहा है उसकी मैं

(अल्लाह) तसदीक करता हूँ जबकि सहिफ़ो, तौरेत, जुबूर और इन्जील। किसी भी किताब में अल्लाह ने पैगम्बरों की आयातों में इस तरह शरीक नहीं किया और नाही ही किसी और पैगम्बर की पैरवी को इस तरह साफ़ साफ़ अल्फाजो में ज़िक्र किया। हमने तो यह कुरआन में पढ़ा की अल्लाह ताअला ने पाक शय ज़िब्राइल अमीन से जो भी कलाम भिजवाए वह गुजरे हुए पैगम्बरों के किस्से और उनपर गुजरे हुए हालात को अल्लाह ने अपने पैगम्बर पर ज़ाहिर किया। अल्लाह ताअला ने जब तौरेत मूसा (अ.स) को सौंपी तो उसमे उनके (मूसा अ.स) की दुआ का ज़िक्र नहीं किया। उसी तरह इन्जील में अल्लाह पाक ने ईसा (अ.स) की आयातों का ज़िक्र नहीं किया लेकिन जो किताब मुहम्मद (स.अ) पर उतारी और उनकी दुआ को अल्लाह ने कलाम पाक में उतार कर यह सन्देश दिया की हम अपने कलामो के साथ अपने हबीब के कलामो पर भी मोहर लगाते हैं, की जो भी यह मुहम्मद (स.अ) कह दें वह भी गलत नहीं हो सकता और मेरे हुक्म के साथ-साथ मेरे हबीब का भी हुक्म मानो ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।

सूरेह आले-इमरान की आयत न.३२ को अल्लाह ताअला फिर एक नए अंदाज़ में पेश कर रहा है देखिए "ऐ पैगम्बर इन लोगो से" कह दो की तुम अल्लाह

और उसके रसूल (स.अ) के हुक्म पर अमल करो, फिर अगर यह (लोग) ना माने तो (जान ले की) अल्लाह हुक्म ना मानने वालो को पसंद नहीं करता।

इस आयत पर तवज्जो की ख़ास जरूरत है अल्लाह पाक सिर्फ अपने हुक्म की ही पैरवी करता तो रसूल-ए-अकरम (स.अ) से कहता मेरा हुक्म लोगो तक पहुंचा दो की अल्लाह का हुक्म ना मानने वालो को जहान्नुम की आग में डाल दिया जाएगा। लिहाज़ा तुम मेरा ही हुक्म मानो और सिर्फ मेरी ही पैरवी करो लेकिन अल्लाह ने फरमाया की मेरी और मेरे रसूल (स.अ) की पैरवी करो और अमल करो ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो बेहुक्म हुए यानी मुशरिक और अल्लाह ऐसे लोगो को सख्त सजा देगा। इस आयत में अल्लाह ताअला ने अपने रसूल के हुक्म पर चलने की ताकीद की है।

अल्लाह हम सब मुसलमानों को तौफीक दे ताकि हमे खुदा परहेज़गारो में शरीक करे आमीन।

सूरेह आले-इमरान की आयत न.९२ में अल्लाह फरमाता है "जब तक तुम अपनी प्यारी चीजों में से (राहे अल्लाह में) खर्च ना करोगे हरगिज़ भलाई हासिल ना कर सकोगे और जो तुम खर्च करते हो अल्लाह को खूब मालूम है"।

इस आयत के मुताबिक़ अल्लाह को भलाई के कामो में खर्च किया जाना बहुत पसंद है, लेकिन वह चीज़ जो तुम्हे बेहद अज़ीज़ है और जो ऐसा करते हैं अल्लाह के बहुत करीब होते हैं, की वह प्यारी चीज़ क्या है ? ।

अगर हम इब्राहीम (अ.स) की ज़िन्दगी पर गौर करें तो आपकी सबसे प्यारी चीज़ आपके बुढापे की औलाद हज़रत इस्माइल (अ.स) थी और आपने उसे राहे खुदा में कुर्बानी के लिए पेश किया। आखरी नबी (स.अ) को अपने नवासे हज़रत हुसैन से बेइन्तिहा मुहब्बत थी और आपने उनकी कुर्बानी राहे खुदा में पेश की। इन मिसालो से हमे इशारा मिला की अपनी पसंदीदा चीज़ खर्च करो दर हकीकत यह है की जब काफिर इस्लाम में दाखिल हो गए तो उसके बावजूद जो बुत उनके पास मौज़ूद थे उसको अपने पास ही रखे हुए थे और कहते थे की अब हमारा ईमान इनपर कतई नहीं है, हमारा खुदा वही है जो हमारे रसूल (स.अ) का खुदा है। लेकिन सालो से यह हमारे साथ रहे हमारे माँ-बाप की यह निशानी है, इस लिए हमे इन से मुहब्बत हो गई है, अब हम इसे अपने से कैसे जुदा करें।

तब अल्लाह ने यह आयत उतारी की अपने दिल की अज़ीज़ चीजों को अल्लाह के नाम कुर्बान करना परहेज़गारी है और जब तक तुम ऐसा नहीं करते परहेज़गार नहीं बन सकते, आज कल हम दुनिया वालो को माल व् दौलत बहुत

प्यारी है। लिहाज़ा वह नेक कामो में उसे खर्च करें जैसे यतीम, यसीर, गरीब, मोहताज़, मुसाफिर और अल्लाह के घरो की तामीर में और अल्लाह को सब कुछ मालूम है, जो तुम खर्च करते हो।

<u>सूरेह आले-इमरान की आयत न.९७</u> में अल्लाह फरमाता है की "और लोगो पर अल्लाह के लिए फ़र्ज़ है के जिनको उस तक पहुंचने की कुवत हो काबे के घर का हज करें और जो उससे मुनकिर हो तो अल्लाह तमाम जहान के लोगो की तरफ से बे परवाह है"।

परहेज़गारी की निशानियो में से एक निशानी हज है और हज अल्लाह ताअला ने फ़र्ज़ किया है। जो वहाँ तक जाने की ताकत रखते हों काबे के घर का हज करें और जो कूवत होते हुए ना करें तो वह मुनकिर हैं और अल्लाह को कुछ भी नहीं पड़ी की लोग हज करें, अगर हज करें तो उनके ही फायदे हैं। यानी वह परहेज़गार बन सकते हैं।

<u>सूरेह आले-इमरान की आयत न.११५</u> में अल्लाह फरमाता है "और भलाई किसी तरह की करें ऐसा हरगीज़ ना होगा की उसकी कदर ना की जाए और अल्लाह परहेज़गारो से खूब जानकार है"।

यहाँ पर अल्लाह ताअला परहेज़गारी के कामो को और खोल कर बयान कर रहा है की हम जो भी भलाई के काम कर रहे हैं उन सबकी खबर अल्लाह को अच्छी तरह मालूम है, चाहे हम किसी भूके को खाना दें या उस भूके के लिए हम औरो से खाना मुहैया कर वाए क्युकी मेरे पास नहीं था तो कोई बात नहीं, लेकिन हम उसका इंतज़ाम करवाए तो दोनों भलाइयों की कदर है अगर हम किसी अंधे को रास्ता दिखा दें या अंधे को अपनी सवारी पर बैठा कर उसके मुकाम पहुंचा दें यह दोनों ही परहेज़गारी की बातें हैं यानी इंसान अपनी कूवत के मुताबिक भलाइयां करता हैं और अल्लाह को उसकी खबर है | इंसान जो कुछ भी नेकिया करता है और उसका मकसद अल्लाह को खूब मालूम है |

<u>सूरेह आले-इमरान की आयत न.१२०</u> में अल्लाह फरमाता है और अगर तुम सब्र करो और मुसीबतों का डट का सामना (करते हुए) परहेज़गारी करो, तो उनका फरेब-दगा तुमको कुछ भी नुक्सान नहीं पहुंचाएगा, क्युकी जो कुछ भी यह कर रहे हैं अल्लाह उसको घेरे हुए है |

यहाँ पर अल्लाह ताअला परहेज़गारी की एक और मिसाल पेश कर रहा है की जब कभी भी तुम पर तकलीफों का पहाड़ टूट पडे तो उसका मुकाबला मजबूती से करो तुमको घबराने की कोई जरूरत नहीं, तुम्को हरगिज़ कपट कुछ

नुकसान नहीं पहुंचा सकेगा तुम ऐसी हालत में सब्र से काम लो ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।

<u>**सूरेह आले-इमरान की आयत न.१३३**</u> में अल्लाह ताअला फरमाता है और अपने परवरदिगार की बक्शीश और जन्नत की तरफ लपको जिसका विस्तार सारी ज़मीन और आसमानों के सामान है, जो परहेज़गारो के लिए तैयार की गई है।

इस आयत में अल्लाह ताअला ने बिलकुल साफ़ कर दिया के बक्शीश उन्ही लोगो की होगी और जन्नत जिसका दर्जा इतना बुलंद है की पूरी ज़मीन और आसमान एक हो जाए तब जन्नत के बराबर होंगे, उन्ही लोगो के हिस्से में आएगी जो परहेज़गार है।

<u>**सूरेह आले-इमरान की आयत न.१७२**</u> में अल्लाह ताअला फरमाता है जिन्होंने घायल होने के बाद भी अल्लाह और पैगम्बर का हुक्म माना उनमें जो नेक और परहेज़गार है उनके लिए बड़ा फल है।

यहाँ पर **जंगे ओहद** हारने के बाद का ज़िक्र है जब आप सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम को मालूम पड़ा की अबू सुफियान जो पूरी जंग की सिपेसलारी कर रहा था वह रोहा नाम की जगह पर ठहरा है। तो आपने सबको इकठ्ठा किया

जिसमें ज़ख्मी लोग भी थे और कहा अभी इसी वक्त रोहा पर हमला करना है कौन तैयार है, तो उसमें सब ने कहा हम तैयार है, और आपने जो लोगो की फ़ौज तैयार कर भेज दी जिसमें ज़ख्मी लोग अपने ज़ख्म को भूल गए और हमला करने के लिए रवाना हो गए। तो यहाँ अल्लाह ताअला ने इन लोगो को नेक कहा और परहेज़गारो में शरीक किया यह फल है. अल्लाह और रसूल (स.अ) का हुक्म मानने का। अल्लाह हुक्म मानने वालो को जन्नत अता करता है।

सूरेह आले-इमरान की आयत न.१७९ में अल्लाह ने यूँ फरमाया "जब तक अल्लाह नापाक को पाक से अलग ना करदेगा वह ईमान वालो को इसी हालत में ना रहने देगा, जिसमें तुम हो और अल्लाह ऐसा भी नहीं की तुमको गैब की बातें बताए अलबत्ता अल्लाह इसके लिए अपने पैगम्बरों में से जिसको चाहता है चुन लेता है, तो तुम अल्लाह और उसके पैगम्बरों पर ईमान लाओ, और अगर तुम ईमान लाओगे और परहेज़गारी से रहोगे तो तुमको बड़ा अज़र मिलेगा"।

परहेज़गार पूरी तरह से पाक व साफ़ होते हैं, अल्लाह उन्हें हर तरह से आज़माता है, यह वाकिया है **जंगे बदर** में जीत के बाद जो माल-ए-गनीमत मिला था उसमें कुछ **लुंगियां** थी. जब उन्हें दुबारा गिना गया तो उसमें से दो कम निकली, एक शक्स जिसका नाम **अब्दुल्लाह बिन शय्या** था उसने अपने साथियो से कहा हो

ना हो यह लुंगियां रसूल (स.अ) ने ही रख ली होगी और यह पैगम्बर ही नहीं है क्युकी पैगम्बरों को सब कुछ मालूम होता है। अचानाक मुहम्मद (स.अ) ने भरे मजमें में एक ऊँची जगह पर खड़े होकर खुदबा दिया और कहने लगे मैं अगर चाहूं तो तुम लोगो को आज से लेकर क़यामत तक की सारी बातें बता दूँ. लेकिन तुम लोगो को इससे क्या हासिल होगा और एक शक्स ने मुझपर इलज़ाम लगाया की वह दोनों लुंगियां मेरे पास है, जब की यह झूट है में यह भी जानता हूँ की यह लुंगिया किसके पास है, लेकिन इससे क्या हासिल होगा। लोगो ने आपसे जोर देकर पुछा कौन है वह, तब आपने उसका नाम बताया और अपनी जगह से उतर गए। इस वाकिए पर अल्लाह ने यह आयत उतारी और कहा मेरा और मेरे रसूल का हुक्म मानने वाले लोग परहेज़गार हुए जिन को हम बड़ा अज़र यानी जन्नत से नवाज़ेंगे।

सूरेह आले इमरान की आयत न.१८६ में अल्लाह फरमाता है (ऐ ईमान वालो) बेशक तुम्हारे मालो और तुम्हारी जानो (के नुक्सान) से ज़रूर तुम्हारी आज़माइश की जाएगी और बेशक जिन लोगो को तुमसे पहले किताब दी जा चुकी है उनसे और मुशरिको से तुम बहुत सी दिल तोड़ने वाली बातें ज़रूर सुनेंगे और

(इस हालात में भी) अगर सब्र से काम लो और परहेज़गारी करो तो बेशक यह हिम्मत का काम है।

इस आयत में अल्लाह साफ़ फरमा रहा है की हम ईमान वालो को आजमाएंगे कभी उनके मालो के नुक्सान से और कभी जानी नुक्सान से और अगर उन्होंने इसपर सब्र किया तो ज़रूर परहेज़गार बन जाएंगे, इसका मतलब साफ़ है परहेज़गार राहे खुदा में जान व माल की परवह नहीं करते उनका तो यही ईमान है के जान और माल अल्लाह की अमानतें हैं जब चाहे वह अपनी अमानत ले सकता है. इतना मज़बूत ईमान परहेज़गार की निशानी है।

सूरेह मायदा की आयत न.८ में अल्लाह ने परहेज़गारी को और अच्छी तरह से बयान कीया है, देखिए "ऐ ईमान वालो अल्लाह के वास्ते इन्साफ के साथ गवाही देने को तैयार रहा करो और एक गिरोह की दुश्मानी के सबब इन्साफ ना छोड़ो, बल्कि दोस्त दुश्मन हर मामले में इन्साफ पर कायम रहो यही परहेज़गारी के ज्यादा नज़दीक है और अल्लाह से डरते रहो अल्लाह तुम्हारे कामो से खबरदार (जानता) है"।

जो अल्लाह से मुहब्बत करता है वह इन्साफ करते वक्त किसी की तरफदारी नहीं करते. चाहे इन्साफ मांगने वाला उनका दुश्मन ही क्यों ना हो। परहेज़गार कभी भी दुश्मन के साथ भी सही फैसला करेंगे, अगर दुश्मन हक्क पर है तो फैसला उसके हक्क में देने में ज़रा भी कटौती नहीं करेगा, और दोस्त की गलती है तो उसके साथ भेद भाव नहीं करेगा और ऐसे इन्साफ पसंद बन्दे अल्लाह के नज़दीक बन जाते हैं और परहेज़गार कहलाते हैं।

सूरेह मायदा की आयत न.४६ में अल्लाह फरमाता है ईसा को हमने इंजील दी जिसमें हिदायत और रौशनी है और तौरेत जो उसके पहले से (मौज़ूद) थी उसकी तस्दीक करते हैं और (खुद भी) परहेज़गारो को राह दिखाने वाली और सीक देने वाली है।

इस आयत में परहेज़गारी पर चलने वालो का बयान है। परहेज़गार अपने रब की भेजी हुई सभी किताबो पर ईमान रखते हैं और उन किताबो की हिदायत पर अमल करते हुए परहेज़गार हो जाते हैं। जिन का ठिकाना जन्नत के बाग़ व मेवे हैं। परहेज़गार हर काम किताबो की रौशनी में करते हैं, यानी शरियत-ए-इस्लाम पर जीते हैं और उसी पे मरते हैं।

<u>सूरेह मायदा की आयत न.९३</u> शायद तुम परहेज़गार बन जाओ को समझाने के लिए यह एक बेहतरीन मिसाल है "देखो जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो जो कुछ खा पी चुके उसमे उनपर गुनाह नहीं रहा जबकी उन्होंने आगे परहेज़गारी की और ईमान लाए और नेक काम किए और फिर अल्लाह से डरते रहे और (युहीं) ईमान पर रहे और डरते रहे और नेकी करते रहे और अल्लाह नेक काम करने वालो को चाहता है" ।

अल्लाह ताअला का यह कहना ईमान वालो से जो गलतियाँ पहले हो चुकी (गुजर) चुकी है, जैसे की उन लोगो ने हराम चीजों को खाया पीया था लेकिन अब नेकियाँ कर रहे हैं और अपने गुनाहों की माफ़ी मांग रहे हैं तो हम ऐसे लोगो के पिछले गुनाह माफ़ कर देंगे और अब परहेज़गारी की ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं । ऐसे लोग परहेज़गारो में शरीक होते हैं अल्लाह ऐसे लोगो पर अपनी (अल्लाह) मुहब्बत रखता है । यानी अल्लाह ताअला गुनेहगार को भी पूरा-पूरा मौक़ा दे रहा है । ताकि वह परहेज़गार बन जाए ।

<u>सूरेह आराफ की आयत न.२६</u> में अल्लाह ताअला ने फरमाया "ऐ आदम के बेटो, हमने तुम्हारे लिए (ऐसी) पोशाक उतारी है जो तुम्हारे परदे की चीजों को

छुपाए और तुम्हारे बदन को रौनक दे और परहेज़गारी का लिबास (सब लिबासो से) आला है यह अल्लाह की निशानिया है शायद लोग तवज्जो दे"।

इस आयत में अल्लाह ताअला ने इंसानी जिस्म पर मौज़ूद परहेज़गारी के लिबास को हमेशा पहने रखने की हिदायत दी है जिस तरह शैतान ने आदम (अ.स) को अल्लाह के हुक्म को तोड़ मरोड़ कर पेश किया और आदम (अ.स) ने शैतान की बात पर अमल किया उसी वक्त उनके जन्नती लिबास ख़त्म हो गए और दोनों (आदम व हव्वा अ.स) अपने जिस्म को छिपाने की कोशिश करने लगे। बात बिलकुल साफ़ तौर पर वाज़ेह हुई की जो लोग अल्लाह के हुक्म और हिदायतों पर अमल करते हैं वह हमेशा हमेशा जन्नत में रहते हैं और उनके जिस्म को अल्लाह की तरफ से नूरी ताकत मिलती है जो उनके जिस्म को एक परदे की तरह ढाक कर रखती है। यह उनके परहेज़गारी का पर्दा होता है और इस परदे (परहेज़गारी) से बेहतर दुनयावी परदे नहीं होते, सबसे आला यह पर्दा है जो खुदा को बहुत पसंद है और जैसे ही आदम (अ.स) ने अल्लाह ताअला की नाफ़रमानी की उसी वक्त उनका परहेज़गारी का लिबास उतर गया और जन्नत से भी बाहर होना पड़ा। यानी अल्लाह पाक ने नाफ़रमानी को बेहयाई की मिसाल से मिलाया है। जैसे की आदम (आ.स) के साथ हुआ। अल्लाह हम सबको इस आला परदे से ढाके रहे आमीन।

<u>सूरेह आराफ की आयत न.९६</u> में अल्लाह पाक का यह कहना की परहेज़गारी पर चलने वालो के लिए हम (अल्लाह) आसमान और ज़मीन की सारी बरकतों के दरवाज़े खोल देते हैं। यानी जब तक दुनिया में वह परहेज़गार रहेगा अल्लाह उसे दुनयावी नेमतो और रहमतो से लबरेज़ रखेगा और जब आखिरत का दिन आएगा तो उसे जन्नत की नेमतो से लबरेज़ रखेगा आमीन।

<u>सूरेह आराफ की आयत न.१५७</u> में खुदा वन्दे कुद्दूस ने क्या ही लाजवाब कलाम फरमाया के दुनिया और आखिरत दोनों में वही कामयाब होंगे जो उस भेजे हुए परहेज़गार मुहम्मद (स.अ) पर ईमान लाएंगे और उसकी हिमायत करेंगे और उसकी मदद करेंगे और जो रौशन किताब (कुरआन) उनके ज़रिए उतारी गई है उसकी रहबरी करेंगे। तो इन्ही लोगो को कामयाबी हासिल होगी और परहेज़गार का ठिकाना जन्नत है।

<u>सूरेह आराफ की आयत न.१५८</u> में अल्लाह ताअला का यह कहना की "शायद तुम सीधी राह पर आ जाओ" यानी सिरातल मुस्तकीम पर जिसके लिए खुदा ने अपने चहिते हबीब (स.अ) को लोगो के पास भेजा ताकि सीधा रास्ता (सिरातल मुस्तकीम) का तरिका सिखाया जाए और लोग परहेज़गार बन जाए। फिर अल्लाह ताअला ने अपनी बात साफ़ तौर पर बयान की लोगो अल्लाह पर

ईमान लाओ और उसके भेजे हुए नबी (स.अ) पर ईमान लाओ और जो अल्लाह और उसकी सभी किताबो पर ईमान रखता है और उसीकी पैरवी करता है, शायद तुम सीधी राह पर आ जाओ।

<u>सूरेह आराफ की आयत न.१६९</u> में अल्लाह ने यहूदियों के उन आलिमो का ज़िक्र करते हुए उनपर जन्नत हराम करते हुए कहा "यह लोग जो तौरेत की आयातों को अपने तरीके से तोड़ मरोड़ के पेश करते हैं जिससे इन्हें कुछ दाम मिल जाया करते हैं और पकडे जाने पर कहते है की हम अल्लाह के चाहने वालो में से हैं लिहाज़ा हमारे गुनाह तो माफ़ हो जाएंगे" इनकी इस हरकत पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मलामत की और कहा "हम ऐसे नाफरमानों को जहान्नुम में दाखिल करेंगे और हमेशा हमेशा इसी में रहेंगे और जो अल्लाह और उसकी किताबो के फरमा बरदार हैं वोही परहेज़गार हैं जिनका ठिकाना आखिरत का घर यानी जन्नत है।

<u>सूरेह आराफ की आयत न.१७१</u> में अल्लाह फरमाता है की हमारी भेजी हुई किताब को मजबूती के साथ लिए रहना (पकड़ लो). मतलब है जो कुछ इस किताब में हिदायते और हुक्म मौज़ूद हैं उन्हें कभी ना छोड़ना सिर्फ अमल करना तुम्हारा मकसद होना चाहिए और अगर तुमने ज़रा भी ढील दी तो शैतान तुम्हे राह

से भटका देगा जो की उसका वादा है I यह किताब और रसूल (स.अ) तुम्हारे रहबर है, अमल करोगे तो तुम भी परहेज़गार बन जाओगे I

<u>सूरेह आराफ की आयत न.२०१</u> में अल्लाह पाक ने परहेज़गार की खुसूसियत बयान करते हुए कहा "जो लोग परहेज़गार हैं जब कभी शैतान की तरफ का कोई ख़याल उनको छू भी जाता है तो चौक पड़ते हैं और वह उसी दम दिल की आंखे खोल कर देखने लगते हैं" I

इस हिस्से का खुलासा देखे जिसमें कहा गया है जब कभी भी शैतान की तरफ का कुछ ख़याल तुमको छू भी जाता है तो चौक पड़ते हैं, मतलब बिलकुल साफ़ है की परहेज़गारो का ठिकाना जन्नत है और आदम (अ.स) और हव्वा (अ.स) जन्नत में ही रह रहे थे I फिर शैतान ने उन्हें वर्गालाया (बहकाया) और उन्हें जन्नत से निकाला गया. बस यह ख़याल करते ही परहेज़गार चौक जाते हैं, की कहीं उनको भी जन्नत का नुक्सान न उठाना पड़े I

<u>सूरेह आराफ की आयत न.३४</u> का मुताअला कर रहे हैं जैसे की आयत में कहा "लेकिन अब क्युकी अल्लाह उनपर अज़ाब ना उतारेगा जबकि वह मस्जिद-ए-हराम (यानी काबे का घर) में जाने से लोगो (यानी मुसलमानों) को रोकते हैं,

हाला की वह उसके मुतवल्ली नहीं। उसके लिए सही मुतवल्ली तो वही है जो परहेज़गार है और अल्लाह का डर रखते हैं लेकिन इन में से बहुत लोग यह समझ नहीं पाते।

जैसे जैसे हम कुरआन की सूरेह को आगे बढ़ता देख रहे हैं वैसे वैसे परहेज़गारी की अफ्ज़लियत भी मालूम पड़ती जा रही है अब इसी आयत में हमने देखा की अल्लाह ताअला अपने घर काबा का मुतवल्ली भी एक परहेज़गार को ही मुक़र्रर कर रहा है, यानी एक परहेज़गार ही काबे का मुतवल्ली बन सकता है। यानी हर परहेज़गार अल्लाह के नज़दीक उसके घर का मुतवल्ली हुआ. अल्लाह हम सबको यह तौफीक नसीब फरमाए आमीन।

<u>सूरेह तौबा की आयत न.४</u> अल्लाह ताअला ने परहेज़गार की एक और खुसूसियत बयान की है की परहेज़गार कैसी भी हालातो में हो और अगर उनका मुहायदा चाहे काफ़िरो और मुशरिको से ही क्यों ना हो, कतई अपने एहद से डिगते नहीं उस वक्त तक जब तक मुशरिक भी अपने किए एहद से नहीं मुकरते परहेज़गारो को चाहे जितनी भी तकलीफे क्यों ना उठानी पड़े लेकिन अपना एहद हर हाल में पूरा करते हैं और अल्लाह एहद पूरा करने वालो को अपने करीब रखता है यानी दोस्त रखता है।

<u>सूरेह तौबा की आयत न.३६</u> में अल्लाह ताअला का यह हुक्म देना सीधा दीन तो यह है । तो ऐ ईमान वालो इन चार (ज़िल्कद, ज़िलहिज्ज, मुहर्रम और रज्जब) अदब वाले महीनो में लड़ाई या खु-रेज़ी करके अपने ऊपर ज़ुल्म ना लादें, और तुम सब मिलकर इन मुशरिको से लड़ो जैसे वह सब तुमसे लड़ते हैं और जानते रहो की अल्लाह परहेज़गारो का साथी है, परहेज़गार हर हुक्म-ए-इलाही पर अमल करता है जो मना है तो वह मना है चाहे जो भी हो और अगर दुश्मन इन महीनो में तुमसे जंग करे तो फिर तुम्हे भी हुक्म है सब एक होकर इन मुशरिको पर हमला करो अब यही परहेज़गारी है और परहेज़गारो का दोस्त खुदा है ।

<u>सूरेह तौबा की आयत न.४४</u> में अल्लाह ने परहेज़गारी पर और रौशनी डाली है, "जैसे इस आयत में जो लोग अल्लाह पर और आखिरत पर ईमान रखते हैं वह तुमसे इस बात की मोहलत नहीं मांगते की अपनी जान व माल से जिहाद में शरीक ना हो, अल्लाह परहेज़गारो को, डर मानने वालो को खूब जानता है" ।

परहेज़गार अपने रसूल (स.अ) के हुक्म पर अमल करते हैं और वह कभी भी ऐसी गुस्ताखी नहीं करते जिससे की जिहाद का हुक्म मिलने पर अपनी जान या माल की मुहब्बत रखे । बल्कि यह दोनों नेमते जिहाद के नाम पर कुर्बान करते हुए परहेज़गार बन जाते हैं ।

<u>सूरेह तौबा की आयत न.१०८</u> में अल्लाह ताअला अपने हबीब से मुखातिब है और ऐसी मस्जिद जिसकी नीव यह एहद लेकर बनाई गई थी की मुसलमानों को गुमराह किया जाएगा इस मस्जिद को एक यहुदी आलिम **अबू आमिर** ने बनवाई थी। इसने मुसलमानों के सभी तौर तरीके सीख लिए ताकि मस्जिद में ही रहकर कुरआन की आयातों का मतलब गलत तरीके से बयान करे और अपने यहुदी मज़हब को पाक साफ़ बताकर मुसलमानों को गुमराह किया जाए। ऐसी मस्जिद में नमाज़ पढ़ना तो दूर इसमें जाना भी गुनाह है, क्युकी इसकी नीव परहेज़गारी पे ना रख कर इस्लाम की मुखालिफत पर रखी गई थी। इसलिए अल्लाह ताअला ने इस मस्जिद को तोड़ने का हुक्म दिया, और आपने (नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम) ऐसा ही किया। अगर रसूल इसमें एक बार भी नमाज़ पढ़ लेते तो फिर यह नहीं टूट सकती थी।

<u>सूरेह हूद की आयत न.४९</u> में अल्लाह ताअला अपने हबीब से मुतवज्जो हो रहा है और यह कहना की यह गैब की कुछ खबरें हैं जो हम वही के ज़रिए तुम्हारी तरफ भेजते हैं, इससे पहले तुम और तुम्हारी कौम के लोग इन बातों को ना जानते थे, तो तुम सब्र करो बेशक परहेज़गारो का आखिरत में भला है।

जो अल्लाह के एह्कामो को अमल में लाते हैं गैर ईमान वालो की बुरी बातों को सुनकर सब्र से मान लेते हैं उनकी बेजा हरकतों से मायूस नहीं होते अल्लाह की हिदायतों को उन तक पहुंचाने में कोई कसर नहीं छोड़ते. उनकी बुरी हरकतों का फैसला खुदा के सुपुर्द करतें हैं ऐसे लोगो का अंत भला होता है और यही परहेज़गार हैं, इस तरह अल्लाह पाक परहेज़गारो को आज़माता रहता है l

सूरेह युसूफ की आयत न.५७ परहेज़गारी का इनाम क्या खूब खुदा अता करता है? l जब ज़ुलेखा ने युसूफ (अ.स) से कहा अगर तूने मेरी ख्वाहिश पूरी नहीं की तो मैं तुझे कैद करवा दूंगी, आपने फ़ौरन कहा या खुदा तू मुझे कैद में डलवा दे क़ब्ल इसके की मुझे हमबिस्तरी के लिए गुमराह करे और खुदा ने आपकी दुआ क़ुबूल की कैद खाने में आप ७ साल कैद रहे अपने सब्र को कायम रखा और परहेज़गारी को अपनाए रहे और आपको इसी कैद खाने से इसी मुल्क की बादशाहत से नवाज़ा सुबहन-अल्लाह और जो लोग ईमान लाए और परहेज़गारी करते रहे उनके लिए आखिरत का अजर ज्यादा भला है l

सूरेह युसूफ की आयत न.९० में अल्लाह फरमा रहा है जब युसूफ (अ.स) के सभी भाइयों ने मिलकर आपको एक अंधे कुए में फेक दिया तो उसी वक्त अल्लाह ने आपको वही भेजी "की तुम घबराओ नहीं एक दिन इन लोगो (यानी

युसूफ अ.स के भाइयों) को इस बुरे बर्ताव से जतलाओगे और वह तुमको जान भी ना पावेंगे, आपने अल्लाह के हुक्म को मानते हुए चुप चाप ज़ुल्म बर्दास्त करते रहे और जब आपको बादशाहत मिली तो एक दिन इन सभी दसों भाइयों को आपके पास मदद मांगने आना पड़ा लेकिन कोई भी आपको नहीं पहचान पाया लेकिन आखिर कार युसूफ (अ.स) ने खुद ही कहा की तुम लोगो को कुछ याद भी है जिस वक्त तुम बेवकूफी पर थे तो तुमने युसूफ और उसके भाई के साथ क्या किया था इन अल्फाजो पर याहुदा चौंका की यह हादसा तो हम १० भाइयों के आलावा कोई जानता ना था, इन्हें कैसे मालूम हुआ ? । फिर खुद ही सवाल किया आप ही युसूफ हैं ? । युसूफ (अ.स) ने कहा मैं ही युसूफ हूँ, हम पर अल्लाह ने महरबानी की बेशक जो कोई परहेज़गार हो और सब्र करें तो अल्लाह नेकी करने वालो का अजर बेकार नहीं होने देता।

अल्लाह ताअला ने युसूफ (अ.स) की परहेज़गारी का बेहतरीन तोहफा दिया अल्लाह हम सभी को परहेज़गार बनाए आमीन।

सूरेह रदा की आयत न.३५ में नबी-ए-करीम (स.अ) जब एक रास्ते से गुजरते थे तो एक बूढी औरत आप पर अपने घर का निकला हुआ कूड़ा फेकती थी. लेकिन आप चुप चाप सर झुकाए गुजर जाते थे। आपने कभी शिकायत भी ना

की । यह सिलसिला लगातार चलता रहा, आपके सामने अल्लाह की हिदायतें मौज़ूद थी जिस में अल्लाह फरमाता है जिन्होने अपने परवरदिगार की खुशियाँ हासिल करने के लिए (दुनिया की कसौटियों की परवह ना कर) सब्र से काम लिया और नामाज़े कायम रखी और हमारे दिए में से चुपके और ज़ाहिर (अल्लाह की राह में) खर्च किया और बुराई के बदले में भलाई की, यही लोग हैं जिनको आखिरत में अच्छा अंजाम है और एक बार आप जब उसी रास्ते से गुज़र रहे थे तो आप पर कूड़ा नहीं डाला गया, आपको ताज्जुब हुआ की आज क्या बात है, जो की कूड़ा नहीं फेका गया । आपने पास के लोगो से दरयाफ्त किया के क्या बात है, जो औरत मुझपर रोज़ कूड़ा फेकती थी आज उसने मुझपर कूड़ा क्यु नहीं फेका उसकी तबियत तो ठीक है या नहीं, लोगो ने बताया की वह बूढी औरत बीमार है, आप फ़ौरन उसके घर पहुँच गए और उसकी खैर मालूम की बुढ़िया को अपने किए पर बहुत पछतावा हुआ उसने आपसे माफ़ी मांगी और ईमान ले आई । इस तरह रसूल अल्लाह (स.अ) ने बुराई का बदला भलाई से दिया और परहेज़गारी का उन्हें इनाम खुदा ने अता किया और कहा परहेज़गारो के लिए जन्नत का वादा किया गया है । उसका हाल यह है की उसके नीचे नहरे बह रही है, उसके फल सदा बहार

है और छाया भी। यह उन लोगो का इनाम है जो परहेज़गारी करते रहे और इनकारियों का अंजाम आग है।

अब हम बड़े बड़े परहेज़गारो की बात सुनते हैं जिन्होंने अपनी पूरी ज़िन्दगी परहेज़गारी से शुरू की और परहेज़गारी पर ख़त्म कर दी। जैसे की जब **हज़रत इब्राहीम (अ.स) की उम्र ९९ साल** की थी तो आपकी बीवी **"सारा"** ने कहा की आप कनीज़ हाजरा से निकाह कर लें ताकि आप भी औलाद वाले बने। चुनांचे आपने **हज़रत हाजरा** से शादी की और **हज़रत इस्माइल (अ.स)** की पैदाइश हुई। कुछ वक्त बाद सारा को जलन होने लगी की इसे औलाद हो गई और मैं आज तक बे औलाद हूँ, इसी जलन को लेकर अक्सर सारा और हाजरा में झगडे हुआ करते थे। तब इब्राहीम (अ.स) हाजरा (अ.स) को लेकर मक्का पहुँच गए, आप अल्लाह के हुक्मो पर अमल करते रहे, मक्का उस वक्त एक रेगिस्तान था इसके आस पास पहाड़ और जंगल ही थे किसी तरह की आसानिया ना थी। तब आप इब्राहीम (अ.स) ने अल्लाह से दुआ की " ऐ परवरदिगार मैंने तेरे अदब वाले घर के आस-पास ज़मीन में जहां खेती नहीं अपनी कुछ औलाद बसाई ताकि यह लोग नमाज़ कायम करें तो ऐसा करके लोगो के दिल इसकी तरफ को लगे और फलो से इनको रोज़ी दे, शायद यह शुक्र करें इस शहर को अमन की जगह बना और मुझको

मेरी औलाद को इससे बचा की बुतों को पूजे. ऐ मेरे परवरदिगार मुझको और मेरी औलाद को इस लायक कर की नमाज़ कायम रखें और ऐ परवरदिगार मेरी दुआ क़ुबूल कर" ।

अल्लाह ताअला ने इब्राहीम (अ.स) की दुआ क़ुबूल की और आज मक्का हर तरह से माल दार है । अल्लाह पाक परहेज़गारो की दुआ ऐसे ही क़ुबूल करता है ।

इब्राहीम (अ.स) का मुकाबला नमरूद बादशाह से था । यह काफ़िर था, और इब्राहीम (अ.स) को किसी ना किसी तरह दबाना चाहता था लेकिन आप सब्र और नमाज़ से काम लेते और अपनी परहेज़गारी कायम रखते हुए नमरूद से मुकाबला करते रहे और कामयाब रहे । एक बार नमरूद ने कहा ऐ इब्राहीम मैं तेरे खुदा को देखना चाहता हूँ । आपने कहा यह ना-मुमकिन है । नमरूद बोल मेरे लिए कुछ भी ना मुमकिन नहीं है । मैं सब कुछ कर सकता हूँ, आपने कहा ठीक है करके बता । नमरूद ने अपने वजीर से कह कर एक **बुर्ज** बनवाया, जब उसे लगा अब यह आसमान के बिलकुल करीब है, तो बुर्ज पर जा पहुंचा, लेकिन उसे बुर्ज से भी आसमान काफी दूर लगा । वह परेशान हो गया तभी आसमान से बिजली कडकी और बुर्ज धराशाही हो गया । लेकिन फिर भी यह ना माना अब इसने एक

नई तरकीब खोजी इसके तहत इसने एक संदूक बनवाया संदूक के चारो कोनो पर लोहे के खम्बे लगवाए जो की संदूक के तले में लगे थे। इन खम्बो में ४ जानदार गिदो को बाँध दिया, खुद संदूक में बैठ गया फिर इसने एक छड में गोश्त का टुकडा लगाया और गिदो को दिखा कर ऊंचा कर दिया। गीध टुकड़े की लालच में ऊपर उड़ने लगे और लगातार ३ दिन तक यह आसमान पर पहुँचने की कोशिश करता रहा फिर इसमें खौफ पैदा हो गया। तब इसने गोश्त के टुकड़े की चढ़ को ज़मीन की तरफ कर दिया, तो गिद अब नीचे उतरने लगे इस तरह इब्राहीम (अ.स) की परहेज़गारी नमरूद के घमंड पर भारी पड़ी और नमरूद शर्म शार हुआ, कामयाबी परहेज़गारो की मोहताज़ है।

जब **<u>हज़रत तालिखा</u>** अपने बादशाह दकियानूस के कुफ्र से तंग आ गए और उन्हें और उनके पांच दोस्तों को ऐसा लगा के वह भी गुमराह ना हो जाए। तो आप सब अपने हकीकी खुदा की तलाश में शहर अफ़सोस को रातो रात छोड़ दिया और जैसे ही वह अपने शहर की हदों को लांघ गए। उसी वक्त अपने घोड़ो को छोड़कर पैदल रास्ता तय करने लगे और काफी देर चलते चलते थक चुके थे। इन लोगो को पैदल चलने की आदत जो नहीं थी। क्युकी यह महल की शान-ओ-शौकत के आदि थे, लेकिन आज यह एक नेक रास्ते पर चल रहे थे लेकिन अपने

रब को पाने की आस में इन्हें हर तकलीफ मंजूर थी, इन लोगो का गला प्यास से सूख रहा था और पैरो से खून टपक रहा था. एक जगह पर रुके तो देखा की एक चरवाहा भेड़-बकरिया चरवा रहा था, उससे मिन्नत की अगर हो सके तो अपनी बकरी का थोडा दूध पिला दे ताकि भूक और प्यास दोनों से राहत मिल जाए l चुनांचे चरवाहे ने ख़ुशी ख़ुशी दूध पिलाया और उन से कहा की मैं भी ईमान लाना चाहता हूँ और वह अपने मालिक को जानवर सौंप कर सातवा शक्स बना और साथ में एक कुत्ता जिसका नाम कित्मीर था वह भी इनके साथ हो लिया और परहेज़गारी इख्तियार करते हुए अपने रब की तलाश में एक खो में छुप गए काफी थके थे लिहाज ७ लोग बहुत जल्द एक गहरी नींद की आगोश में सो गए l खुदा ने भी इन सातो को ३९० साल तक सुलाया, सूरज को हुक्म था के इनके दाएं और बाएं जानिब से गुज़रे और फरिश्तो को हुक्म दिया की इनकी करवटें बदलते रहना l कुत्ता गुफा के बाहर बैठा इनकी हिफाज़त करने वालो में था और जब अल्लाह ने उनकी नींद तोड़ी तो एक दुसरे से सवाल करने लगे की हम कितना सोए होंगे, कोई कहता एक दिन या कुछ कम या कुछ ज्यादा लेकिन जब उनमे से एक साथी जिसका नाम तालिखा था गुफा के बाहर शहर में गए तो उन्हें मालूम हुआ की वह ३९० साल सोते रहे और आखिर में लोगो से बचते हुए वापस अपनी गुफा में पहुँच

गए और अपने लोगो से पूरा वाकिया बयान किया इन सभी को डर हुआ के कहीं यह दुनियावी लोग हमे अपने ईमान से हटा ना दें तो फिर सभी ने अल्लाह से दुआ की "या अल्लाह हम तेरे हो चुके और अब हम लोगो को अपने पास वापस बुला ले हम अब इन लोगो की दुनिया में वापस नहीं जाना चाहते" अल्लाह ने परहेज़गारो की दुआ क़ुबूल की और उस गुफा को हमेशा के लिए बंद कर दिया l बाद में एक मुसलमान बादशाह ने इस गुफा के ऊपर एक मस्जिद की तामीर करवाई जो आज तक एक निशानी के तौर पर मौज़ूद है l यह अफ़सोस नाम के शहर में मैजूद है अल्लाह पाक परहेज़गारो को ऐसा ही सिला देते हैं l

बात को आगे बढाते हुए हम आपको यह बताने जा रहे हैं की किस तरह इन सातो परहेज़गारो की दुआ अल्लाह ने क़ुबूल फरमाई, जब सातो लोग (**मक-कन-नस, नु-नस, कु-नस, सर-क्यु-नस,यकम लिया, तालिखा और गुलाम अब्दुल्लाह**) एक गहरी नींद में जाने के बाद जब अल्लाह ताअला ने पहले ३ लोग जिसमे तालिखा शरीक थे उठाया, तो गार के रास्ते को बंद पाया तो फ़िक्र मंद हुए की इस गार से बाहर कैसे निकला जाए तभी पहले साथी ने इस तरह दुआ की "ऐ मेरे परवरदिगार आज मुझे उस नेकी का बदला दे ताकि मैं इस गार से बाहर निकल सकू l जब मैंने एक मजदूर को काम पर बुलाया था और कुछ घंटे बाद मैंने उससे

कहा मुझे तुम्हारा काम पसंद नहीं आरहा है फिर भी तुम आधी मजदूरी लो और चले जाओ। मजदूर ने कहा जनाब आपको मेरा काम पसंद नहीं तो मैं आधी मजदूरी भी क्यु लूँ और चला गया। लेकिन ऐ मेरे परवरदिगार मुझे तेरा खौफ था, की तू हक़ मारने वालो का साथ नहीं दिया करता है, चुनांचे मैंने उसकी आधी मजदूरी से एक गाय का बच्चा लिया और उसे जंगले के मखसूस हिस्से में छोड़ दिया काफी लम्बे अरसे के बाद इस एक गाय से तमाम गाय हो गई। मैं इनकी देख भाल करता रहा और एक दिन वही मजदूर बहुत बुरी हालत में मेरे पास आया और कहने लगा मैंने अपने घमंड के मारे उस दिन अपनी आधी मजदूरी लेने से इनकार कर दिया था। मैं उसके लिए आपसे माफ़ी मांगता हूँ और मुझे आज बेहद ज़रूरत है, क्युकी मेरे घर में फाके की नौबत आ चुकी है, मैंने उसके कलाम सुनने के बाद बा इज्ज़त उसको उन गायों के पास ले गया और सौंप दी जैसे ही किस्सा पूरा हुआ उसी वक्त गार की दीवार का १/३ हिस्सा टूट कर गिर पड़ा।

अब दुसरे साथी ने यह हकीकत देखि तो उसने भी अपनी नेकी याद की और कहने लगा "ऐ परवरदिगार मुझे आज भी याद है जब एक खूबसूरत औरत मेरे पास आई और कहने लगी मेरे घर में पेट भरने के लिए अनाज नहीं है, लिहाज आप मुझे अनाज से मदद करें। मैंने उस औरत से कहा हम तुम्हे अनाज दे सकते

हैं, लेकिन इसके बदले तुम्हे एक रात मेरे साथ जुज़ारनी पड़ेगी. औरत ने इनकार किया और चली गई, दुसरे दिन यह औरत वापस आई और वही अलफ़ाज़ बोली, मैंने फिर अपनी शर्त दोहराई औरत ने इनकार किया और चली गई, तीसरे दिन भी यह औरत आई मैंने अपनी शर्त रखी, लेकिन उसने इनकार किया और चली गई l चौथे दिन औरत आई और बोली हमे आपकी शर्त मंजूर है l मुझे ताज्जुब हुआ की इस औरत ने ३ बार इनकार किया और चौथी बार में राज़ी हो गई, मैं उससे पूछ बैठा तुमने ऐसा क्यु किया l औरत बोली मैंने पहले ३ बार इनकार किया के कहीं खुदा मुझसे नाराज़ ना हो जाए और चौथी बार मुझे अपने बच्चो का ख़याल आगया की कहीं वह भूक से ना मर जाए l मैंने औरत की बात सुनी और राशन दे दिया मुझे भी तेरा खौफ था मेरे मालिक इस लिए मैंने अपनी नफ़्स को कुचल डाला और तेरे नाम पर मदद कर दी l आज मुझे उस नेकी का बदला चाहिए, फ़ौरन गार का १/३ हिस्सा और खुल गया. तभी तीसरे साथी ने अपनी एक नेकी को याद करते हुए कहा एक दिन रात में मेरे वालदैन ने मुझे आवाज़ देते हुए कहा बेटा हमे दूध गरम करके दे दो, मैंने दूध गरम किया और उनके पास ले गया लेकिन वालदैन की आँख लग चुकी थी, मैंने उन्हें जगाना बेहतर नहीं समझा और इस इंतज़ार में राहा की अब जागे की तब जागे इस तरह सुबह हो गई लेकिन मैं दूध लिए खड़े रहा और जब वालदैन

जागे तो मैंने उन्हें दूध पेश कर दिया, या मालिक मैंने अपने वालदैन की फरमा बरदारी की जो की तेरा हुक्म है, आज मेरी उस नेकी के बदले इस गार से बाहर जाने का रास्ता दे, फ़ौरन दीवार का बचा हुआ हिस्सा भी गिर पडा। इस तरह अल्लाह ताअला ने परहेज़गारो को उनका अज़र दिया अल्लाह ताअला हम सभी को परहेज़गार बनाए आमीन।

परहेज़गारो की फेहरिस्त में एक और नाम का ज़िक्र करते हैं जिन्हें खुदा ने **इल्म-ए-लादूनी** से नवाज़ा। जी हाँ हम **खिज़र (अ.स)** की बात कर रहे हैं, जब हज़रत जुलकरनैन (अ.स) ने ख्वाहिश ज़ाहिर की मेरी उम्र बढ़ जाए तब खिज़र (अ.स) ने राय दी के आप **आबे-हयात** पीलें, अब सवाल यह था की किस तरह आबे-हयात हासिल किया गए और यह कहां मिलेगा तब खिज़र (अ.स) ने कहा आबे-हयात **बहाले जुल्मत** में मौज़ूद है जहां ३६० चश्मे मौज़ूद हैं और इनमे से ही एक चश्मा आबे-हयात है लेकिन इस चश्मे तक पहुँचने का रास्ता बेहद सख्त है। इस लिए मैं यह काम खुद अपनी निगरानी में करूंगा। चुनांचे आपने खुद इस काम को अंजाम देने के लिए अपने साथ ३५९ लोगो को लिया और ३६० मुर्दा मछली अपने पास रख कर बहाले-ज़ुल्मत कि तरफ रवाना हो गए। काफी परेशानी उठाने के बाद और एक लंबा सफ़र तय करने के बाद आखिर आप पहुँच गए। जगह का

मुआएना किया फिर आपने सभी ३५९ साथियो को एक एक मुर्दा मछली दी और एक मछली आपने खुद अपने पास रख ली और हर शक्स को अलग अलग झरने पर भेजते वक्त ताकीत की "अपनी मुर्दा मछली झरने के पानी में छोड़ देना जिसकी मछली ज़िंदा हो जाए वह शक्स वहीं पर मौज़ूद रहेगा और मुझे आवाज़ देकर बुलाएगा। चुनांचे सभी लोग अपने-अपने झरनों पर पहुँच कर मुर्दा मछली को झरने में डालकर ज़िंदा होने की राह देखने लगे। लेकिन जब खिज़र (अ.स) ने अपनी मुर्दा मछली जैसे ही पानी में डाली वह ज़िंदा हो गई, आपने पानी पीया फिर नहाया आप परहेज़गारी पर थे और एक पैगम्बर का साथ दे रहे थे। अल्लाह पाक ने आपको कामयाब किया, आपने चश्मे में एक ख़ास किस्म का निशान लगाया, आपके सभी साथी मायूसी की हालत में आपका इंतज़ार कर रहे थे, आपने उन्हें खुश खबरी सुनाई और वहां से चल दिए फिर आपने यह खुशखबरी हज़रत जुलकरनैन (अ.स) को सुनाई, आप फ़ौरन आबे हयात हासिल करने के लिए रवाना हो गए और बहाले ज़ुल्मत पहुँच गए और ३६० चश्मों के बीच खड़े हो गए, खिज़र (अ.स) परेशान हो गए की कौनसा चश्मा आबे हयात का है, क्युकी सभी ३६० चश्मों पे इनके ही लगे निशान मौज़ूद थे आपने बड़ी कोशिश की लेकिन नाकाम रहे, यह तो मस्लहक-ए-इलाही है की अल्लाह ने जिसे चाहा पिलाया और

नेहलाया और खिज़र (अ.स) आज तक हयात है l अल्लाह ताअला परहेज़गारो को ऐसे ही सिला दिया करता है l

परहेज़गारो की फेहरिस्त में एक और पैगम्बर की बात करते हैं आपका नाम **अब्दुल्लाह बिन जहाब बिन माद** आपको हुक्म मिला के लोगो के बीच जाओ और तबलीग करो, आपका तरिका कुछ ऐसा था के आप लोगो को सडको पर इकट्ठा करते और कहते खुदा एक है उसका कोई शरीक नहीं वह सारी काइनात का मालिक है, लोगो सिर्फ खुदा की इबादत करो इन बुतों की इबादत ना करो ना तो यह तुमको कुछ फायदा ही पहुंचा सकते है और ना ही नुक्सान, अगर तुम अपनी हरकतों से बाज़ ना आए तो आखिरत में तुम्हारा ठिकाना जहान्नुम है l यह कौम निहायत ज़ालिम और गुमराह थी l इनके खुदा सैकड़ो बुत थे l कई बार आपको लोगो ने बयान करने से रोका और बुतों की तारीफ़ की, लेकिन आप अपने काम में मुसलसल लगे रहे और काफ़िरो की धमकियों से बे परवाह अपने काम को अंजाम देते रहे l लेकिन एक दिन काफ़िरो ने एक योजना के तहत, जब आप लोगो को हिदायत दे रहे थे तभी मौज़ूद लोगो में से किसी एक ने आपके सर के बीच हिस्से पर तलवार से हमला कर दिया और आप शहीद हो गए, आपकी तमन्ना और एहद पूरा ना हो सका, आप परहेज़गारी पर थे और अल्लाह परहेज़गारो के साथ है

। इस लिए खुदा ने आपको ५०० साल बाद फिर सोइ हुई नींद से उठाया। लेकिन आपके सर के बीचो बीच से एक उभार निकला हुआ था। आपने अल्लाह के हुक्म से दुबारा लोगो को हिदायत देनी शुरू की, जब की इस दौर की कौम ज़्यादा समझ दार थी, लेकिन इसके बावजूद कुफ्र का बोल बाला था और लोगो के खुदा बड़े-बड़े बुत थे, इस दौर में भी आपको दुश्मनों का सामना करना पड़ रहा था, और लोग आपको क़त्ल करने के इरादे से निकल चुके थे। चुनांचे मौक़ा पाते ही आपके सर के दाहिने हिस्से पर तरवार चला दी जिससे आप शहीद हो गए। शायद परहेज़गारी पर चलने वालो को लोग इसी तरह की अज़ीयतें पहुंचाते हैं, लेकिन अल्लाह इन परहेज़गारो का क्या खूब साथ देता है और अल्लाह पाक ने आपको ५०० साल बाद दोबारा ज़िन्दगी अता की और आप दोबारा तबलीग करते नज़र आए। यह कौम पिछली कौम से लाख गुना सुधरी हुई थी लेकिन बुत परस्ती बा दस्तूर जारी थी। आपका तरिका वही पुराना लोगो को आम जगाहों पर इकठ्ठा करना और खुदा के पैगामो को सुनाना और ताकीद करना के खुदा के अलावा और कोई इबादत के लायक नहीं। इन बुतों की पूजा मत करो यह ना तो तुम्हे फायदा पहुंचा सकते हैं और ना ही नुक्सान, यह लाचार है। आपकी हिदायतों पर लोग ईमान लाने लगे लेकिन दुश्मनों की तादाद ज्यादा थी, लोग अपने माबूदो के बारे में ऐसी

बाते सुन्ना गुनाह समझते थे और उनके अन्दर आपको मारने की तरकीबे चल रही थी और एक दिन योजना के तहत जब आप लोगो को मुखातिब कर रहे थे, तो एक शक्स ने आपके बाएँ जानिब से वार कर दिया और आप शहीद हो गए I लेकिन खुदा दिलो के राज़ जानने वाला है और खुदा परहेज़गारो से बेहद मुहब्बत करता है और उनकी आरज़ू पूरी फरमाता है I चुनांचे ५०० साल बाद आपको खुदा ने फिर ज़िंदा किया लेकिन इस बार आपके सर के अपर ३ उभार मौज़ूद थे **बीच का उभार बड़ा और लंबा और दाएं और बाएं जानिब के उभार छोटे थे** I लेकिन अब की बार खुदा ने आपको पैगम्बरी के साथ साथ दुनियावी हुकूमत बक्षी और नाम दिया **"जुलकरनैन"** और खिताब मिला **"सिकंदर-ए-आज़म"** आप ज़िन्दगी भर परहेज़गारी पर चलते रहे खुदा के एह्कामो को पूरा करते हुए दुनिया से रूक्सत हो गए I

अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने जितने भी पैगम्बर दुनिया में भेजे सब को यह पैगाम भेजा की दुनिया में रहकर आखिरत की तैयारी करो, क्युकी आखिरत में मौक़ा नहीं मिलने वाला, यानी दुनिया की आराइशो के आदि ना हो जाना नहीं तो परहेज़गारी का लिबास तुम खो दोगे, यानी दुनिया जिसमे बेहुक्मो की एक बड़ी जमात है, जो शैतान के बताए हुए रास्ते पर चल रहे है, और आखिरत के दिन वह

भूले हुए हैं I ऐ पैगम्बर इन्हें हमारे कलामो से आगाह करते रहो, क्युकी अल्लाह परहेज़गारो से मुहब्बत करता है और उनके लिए ही जन्नत में रहने का ठिकाना बनाया है I

तो आइए देखे एक और परहेज़गार की ज़िन्दगी जब अल्लाह ने **हूद (अ.स)** को मुल्क-ए-यमन और ओमान की सर ज़मीन पर भेज कर तबलीग करवाने का इरादा ज़ाहिर किया. तो **कौम-ए-आद** के लोग आपके दुश्मन बन गए लेकिन आप पर ईमान लाने वाले लोग भी बढ़ते जा रहे थे, जिससे कौम-ए-आद के सरदार बेचैन थे के कहीं पूरी कौम बुत परस्ती को छोड़ कर ईमान वाले ना बन जाए, इस लिए इन लोगो ने हूद (अ.स) को पत्थरो से लहू लोहान कर दीया और जब लोगो को यह यकीन हो गया की आप मर चुके हैं तो वहाँ से भाग निकले I लेकिन परहेज़गारो का साथी खुदा है, चुनांचे खुदा ने फरिश्तो को भेज कर आपकी मदद फरमाई और आप खुदा के पैगाम को पहुंचाने लगे, इसी दरमियान कौम के सरदारों ने आपको शहर छोड़ने का फरमान जारी कर दिया आपने अपने साथियो से कहा हमे इस फरमान की मुखालिफत नहीं करनी है यह कहकर आप ईमान लाचुके लोगो के साथ शहर छोडकर जंगले में जा बसे, आपका शहर छोड़ना भर था, शहर ई-काफ़ में मानो तबाही का सैलाब उमड़ पड़ा लोगो में हा-हा कार मच

गया कौम के लोगो ने अपने सरदारों को यह समझाने की कोशिश की के जबसे पैगम्बर ने यह शहर छोड़ा है उस दिन से तबाही का सिल-सिला शुरू हो गया है I अब उनसे माफ़ी माँगना और दुआ करवाना ही इस मुसीबत से निजात दे सकता है I सरदारों ने एक जमात तैयार की और उन्हें पैगम्बर से दरखास्त करने के लिए रवाना किया I इन लोगो ने शहर का हाल बयान किया के शहर में आकाल पड़ चुका है, बारिश और ज़मीनी पैदवार ख़त्म हो चुकी है I हम सभी आप से माफ़ी मांगते हैं, आप खुदा से दुआ करें I आपने कहा पहले आप लोग वादा करें के आप सभी खुदा पे ईमान लाए और बुतों की पूजा कतई नहीं करेंगे I जमात ने कहा हम और पूरा शहर आप पे और आपके खुदा पे ईमान लाते हैं और बुतों की पूजा हरगिज़ नहीं करेंगे I जब इन लोगो ने एहद ले लिया तो आपने बारगाहे इलाही में हाथ उठाए ही थे, आसमानों से पानी उमड़ पड़ा जमात ने कहा आओ शहर लौट चलें आपने कहा फिलहाल आप शहर लौट जाए हम अपने फैसले पर गौर करेंगे I जब काफी वक्त गुजर गया तो आपने अपने साथियो से मशवरा किया की क्यों ना शहर की खबर ली जाए के ईमान वालो की हुकूमत कायम है या बुत बरसतो की, चुनांचे आप शहर में दाखिल हो गए. लेकिन लोग पहले की तरह ही कुफ्र की ज़िन्दगी बिता रहे थे, हर तरफ बुतों को लोग सजदा कर रहे थे I आप मायूस हुए

और लोगो को राह-रास्त पे लाने के लिए तबलीग करने लगे शहर में आकाल की नौबत आ गई लोगो ने कहा के बदहाली पैगम्बर के आने के बाद शुरू हुई है, आपने कहा यह मनहूसियत तुम्हारे बुतों की पूजा करने से हुई है, फिर एक टकराव की नौबत आ गई लोगो ने तय किया के पैगम्बरों को एक बड़े मैदान में बुलाया जाए और हम सब भी जमा हो और एक साथ पैगम्बर पर ईमान लाने की बात रखे चुनांचे ऐसा ही हुआ पूरा मैदान कौम-ए-आद से भर गया और पैगम्बर के आने का इंतज़ार होने लगा तभी पैगम्बर अपने ईमान वाले साथियो के साथ एक सिरे पर आते दिखाई दिए आपने अपनी जगह पर खड़े होकर तमाम कौम-ए-आद को सलाम अर्ज़ किया और खुदबा देने लगे I सरदारों ने इशारा किया के टूट पड़ो और ख़त्म कर दो I लोगो ने आप पर उन सभी लोगोग पर जो ईमान ला चुके थे, पत्थरो से हमला बोल दिया लेकिन उन्हें बड़ा ताज्जुब हुआ की उनपे कोई असर नहीं हो रहा है मानो पत्थर नहीं फूलो की बारिश हो रही है, दर हकीकत खुदा ने आप और आपके साथियो को हिसार बंद रखा था इसी वजह से आप पर कोई असर नहीं हो रहा था I अल्लाह परहेज़गारो को ऐसे ही अजर देता है I तभी आसमान पर ३ तरह के बादल नमुदार हुए काले रंग के, पीले रंग के, और सफ़ेद रंग के आपने कहा बोलो कौनसे बदल तुम्हे पसंद हैं I सरदार जानते थे की काले बादल ही बारिश

करते हैं चुनांचे बोल उठे काले बादल चाहिए, यह सुनते ही बाकी बादल वहाँ से हट गए और सिर्फ काले बादल ही रेह गए उन बादलो ने एक तूफ़ान पैदा करदिया जिससे लोग बचने के लिए भागने लगे l लेकिन जिधर भागे उधर ही रेत की बड़ी बड़ी दीवारें खड़ी हो जाए फिर अचानक एक **सर्द हवा** जिसका नाम **बाद-ए-अकीम** है वह बहना शुरू हुई जिसने इनकी हड्डियों तक को गला दिया और पूरी कौम-ए-आद को रेगिस्तान में ज़िंदा दफ़न कर दिया l इस तरह खुदा ने परहेज़गारो की हिफाज़त की और बेहुक्मो को अज़ाब में मुब्तिला कर दिया l

खुदा ने जितने भी पैगम्बर भेजे सब ने परहेज़गारी का रास्ता इख्तियार किया और परहेज़गारी की हिदायत दी परहेज़गारी की राह पर चलते हुए तमाम दुशवारियों का मुकाबला किया और कामयाब रहे l खुदा ने उनका भरपूर साथ दिया, जब की अवाम की शक्ल और किरदार इतना खौफनाक हो जैसे की <u>लूत (अ.स)</u> के दौर में हुआ l आप **<u>इब्राहीम (अ.स) की जौजा जनाबे सारा के भाई</u>** थे आपको खुदा ने नबूवत सौंपी आप अपनी ज़िन्दगी के किसी भी वक्त को जाया नहीं करना चाहते थे इस लिए हमेशा खुदा के पैगामो को सुनाया करते थे l लोग आपकी बातो पर तवज्जो नहीं देते थे लोगो में एक बुरा फेल था जिसे शैतान इब्लीस ने फैलाया था l एक बार शैतान इब्लीस एक बच्चे की शक्ल इख्तियार

कर के एक बगीचे में चुपके से घुस गया और बाग़ के फल तोड़ने लगा l बाग़ के मालिक ने इसे फल तोड़ते हुए पकड़ लिया और सजा के तौर पर रोक लिया l मालिक अपने काम में मशगूल हो गया और लड़के को भूल गया, जब उसे याद आय तो वह लड़के के पास गया और बोला यह तुम्हारी पहली गलती है इस लिए मैं तुम्हे माफ़ करता हूँ और आइन्दा ख़याल रखना l लड़का बोला ठीक है लेकिन रात हो चुकी है मैं अकेले घर नहीं जाउंगा और रोने लगा l मालिक ने कहा ठीक है तुम रोओ मत और हमारे साथ रात बिताओ सुबह चले जाना l लड़का चुप हो गया मालिक ने लड़के को बड़े प्यार से खाना खिलाया और सोने के लिए बिस्तर भी दिया l लड़का बोला मैं अपने घर पर अकेले नहीं सोता क्युकी मुझे डर लगता है l मालिक ने कहा ठीक है तुम मेरे पास लेट जाओ, लड़का फ़ौरन लेट गया, कुछ देर बाद लड़का बोल मुझे नींद नहीं आ रही है और मैं रोज़ अपने बाप के पेट पर बैठता हूँ और खेलता हूँ, मालिक को ऐसा लगा जैसे वह उसका अपना बेटा है और जिद कर रहा है "(दर हकीकत मालिक को औलाद नहीं थी)" इसलिए मालिक ने कहा ठीक है तुम मेरे पेट पर बैठ जाओ l लड़का बैठ गया और खेलने लगा कभी वह सीने पर बैठता कभी पेट पर उछलता l फिर मालिक के पाँव पर बैठ गया आहिस्ता आहिस्ता वह मालिक के अज़ा-ए-तानाजूल पर बैठ गया और उसे हाथ से

पकड़ कर खेलने लगा, मालिक ने कहा बुरी बात लड़का बोल यह तो मैं रोज़ अपने बाप के साथ करता हूँ उन्होंने इसे कभी बुरा नहीं कहा, मालिक चुप हो गया क्युकी उसे भी इसका मज़ा आया रहा था I अचानक लड़का नंगा हो गया और अज़ा-ए-तानाजूल को अपने बैतूल खला के मुकाम पर लगाते हुए बोला मेरा बाप हर रात ऐसा ही करता है तुम भी करो I अब क्युकी मालिक को इसमें मज़ा मिल रहा था इस लिए उसने लड़के की ख्वाहिश के मुताबिक एहलाम किया I इसमें उसे बहुत मज़ा आया सुबह होने पर उसने लड़के से कहा, जब तक तुम्हारे वालदैन तुम्हे लेने ना आए तुम यहीं रहना लड़का बोला ठीक है मालिक को एहलाम की लत लग गई I इसलिए उसने अपनी बीवी से हमबिस्तरी करना छोड़ दी और इसका ज़िक्र अपने साथियो से किया I इसका नतीजा यह हुआ की शहर के मर्दों ने अपने घरो में औरतो की जगह लडको को रखना शुरू कर दिया I हर शक्स लड़के को रखना अपनी शान समझता था और औरते भी गुमराही पर उतारू हो गई औरते आपस में हमबिस्तर होने लगी I लूत (अ.स) को एक अजीब-ओ-गरीब कौम का सामना करना पड़ रहा था. आप लोगो को हिदायत देते-देते थक जाते लेकिन लोगो पर इसका कोई असर नहीं पड़ता आपने भी खुदा से अज़ाब की बद्दुआ कर दी I अल्लाह परहेज़गारो की पुकार को नहीं ठुकराता और एक दिन खुदा ने इंसानी

शक्लो में कुछ फ़रिश्ते भेजे, जो दिखने में निहायत खूबसूरत थे, यह सभी लूत (अ.स) के घर में दाखिल हुए और बोले हम मुसाफिर हैं एक रात आपके घर में बिताना चाहते हैं, आप परेशान हो गए की किस तरह इनकी हिफाज़त की जाए I आपने इन्हें अपने घर में छुपा दिया लेकिन आपकी बीवी जो गुमराह थी उसने शहर के बड़े और अमीर लोगो से बोल दिया I चुनांचे यह गुमराह लोग आपके घर पहुंचे और बोले "ऐ लूत तुम हम लोगो को मना करते हो और तुमने भी यह हमारी आदतों को अपनाना शुरू कर दिया है, आपने कहा तुम लोग मुझपर झूठा इलज़ाम मत लगाओ हम कभी खुदा के नाफरमान नहीं रहे हैं, लड़के आज रात मेरे मेहमान हैं" I जमा लोगो ने कहा ठीक है तुम अगर सच्चे हो तो इन लोगो को मेरे हवाले कर दो, आज की रात मैं इनकी मेहमान नवाजी करूंगा. आपने कहा हम हरगिज़ अपने मेहमानों को तुम्हारे हवाले नहीं करेंगे. हाँ अगर तुम चाहो तो मेरी बेटियां हाज़िर हैं I जवाब मिला मुझे लडकियों में कोई दिलचस्बी नहीं I तभी इन खूबसूरत लडको ने कहा आप अन्दर आइए I लूत (अ.स) अन्दर गए और इन लोगो ने इस तरह कहा "ऐ लूत हम अल्लाह के भेजे हुए फ़रिश्ते हैं, हमे इन लोगो को तबाह करने के लिए भेजा गया है, आप आज सुबह का सूरज निकलने के पहले अपने एहलो अवाल के साथ शहर छोड़ देना, लेकिन तुम्हारी बीवी साथ नहीं जाएगी क्युकी

वह गुनाह गारो की जमात में शरीक है और तुम मुड़कर भी नहीं देखना l चुनांचे लूत (अ.स) अपने एहलो अवाल के साथ शहर छोड़ कर निकल गए और जैसे ही आप शहर की हदों के बाहर निकले उसी वक्त पूरे शहर को फरिश्तो ने ऊपर उठा कर छोड़ दिया, पूरा शहर पलट गया इस तरह कौम-ए-लूत को अल्लाह ताअला ने नेस्त-ओ-नाबूद कर दिया और परहेज़गार को एक ज़ालिम कौम से निजात बक्शी l

परहेज़गारो को खुदा सभी नेमतो से नवाज़ता है और परहेज़गारो को तमाम तकलीफों का सामना करना पड़ता है l लेकिन फ़तेह ज़रूर मिलती है l जैसे की **हज़रत सालेह बिन अबिद (अ.स)** के साथ हुआ अल्लाह पाक ने आपको हुक्म दिया सालेह हमारा पैगाम लोगो तक पहुंचाओ l आप लोगो को इबादते इलाही की हिदायत देते l लेकिन लोगो पर बुतों का इतना असर था की सालेह बिन अबिद (अ.स) को झूठा कहते l आपके दौर-ए-पैगम्बरी में ७० बुत थे जिनकी देख भाल ७० आलिमो के पास थी. यह बुत भी छोटे से लेकर बड़े थे, जब आलिमो को आपने हिदायत दी तो आलिमो ने आपसे कहा के क्या तुमने अपने खुदा से बातें की है ? l आपने कहा नहीं l आलिम बोले हम अपने बुतों से बातें करते हैं. सालेह बिन अबिद (अ.स) बोले ठीक है अगर तुम्हारे बुत हमारे सवालों का जवाब दे देंगे तो हम यह शहर छोड़ कर चले जाएंगे और अगर जवाब नहीं दिया तो तुम सब ईमान

ले आओगे। आलिम बोले हाँ हमे शर्त मंज़ूर है, आलिमो ने कहा "ऐ सालेह बिन अबिद (अ.स) तुम ३ शम्बे को हमारे बुत से मुखातिब हो सकते हो"। आपने कहा बेहतर है। इधर बुत की देख भाल करने वाले आलिमो ने बुतों को दूध से नेहलाया। अच्छी तरह से खुशबू वगैरह लगाईं और बुत को सजदा किया और हाथ जोड़कर पलथी मार कर बैठ गए।

इधर सालेह बिन अबिद (अ.स) अपने साथियो के साथ रवाना हुए और ७० बुतों के बुत खाने में हाज़िर हुए, चारो तरफ हज़ारो का हुजूम इकठ्ठा था। लोगो को आज फैसला करना था की सालेह बिन अबिद (अ.स) को शहर बदर किया जाए या बुत परस्त को बुतकश किया जाए। सालेह बिन अबिद (अ.स) ने आलिमो से सवाल किया आपके बुत तैयार हैं मेरे सवालों के जवाब के लिए, "आलिम घमंड से बोले क्यों नहीं" यह बुत भी एक तरतीब में थे सबसे पहले छोटा और आखिर में बड़ा। आपने छोटे बुत से पूछा तुम्हारा नाम क्या है? । बुत से कोई जवाब नहीं मिला। कुछ आगे बढे और दुसरे बुत से भी यही सवाल किया। लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। आलिमो के चहरे पर खौफ तारी होने लगा। हज़रत सालेह बिन अबिद (अ.स) एक के बाद दुसरे फिर तीसरे बुत से पूछते चले गए और आखिर कार सबसे बड़े बुत के नज़दीक पहुंचे और कहने लगे यह सबसे बड़ा बुत है यह तो

जरूर जवाब देगा. आपने सवाल किया तुम्हारा नाम क्या है ? कोई जवाब नहीं मिला फिर आपने सख्ती से कहा तुम्हारा नाम क्या है ? I लेकिन कोई जवाब नहीं मिला I अब आपने आलिमो को मुखातिब किया के वादे के मुताबिक तुम्हे मुसलमान होना है, आलिमो के चहरे बुझ चुके थे I सभी आलिमो ने अपने को संभालते हुए कहा "ऐ सालेह बिन अबिद हमे एक मौका और चाहिए इन माबुदो ने तुम्हारे सवालों का जवाब नहीं दिया तो हम तुम पे ईमान ले आएंगे" I सालेह बिन अबिद (अ.स) ने कहा ठीक है हम तुम्हे एक मौका और देते हैं I

सालेह बिन अबिद (अ.स) के जाने के बाद आलिमो ने अपनी इबादत गाह बंद करदी और बुतों के सामने खूब रोए और लोटने लगे यहाँ तक की जिस्म थक कर चकना चूर हो गया तभी बड़ा बुत बोला "हम खुश हुए बोलो क्या चाहते हो" ? I आलिम बोले आप सालेह बिन अबिद (अ.स) से हम कलाम हों ताकि हमे हार का मुहं ना देखना पड़े I बुत बोला ऐसा ही होगा I दुबारा फिर लोग जमा हुए और सालेह बिन अबिद (अ.स) हाज़िर हुए और बुत से मुखातिब हों कर नाम पूछा I लेकिन कोई जवाब नहीं मजमे के तमाम लोग सालेह बिन अबिद (अ.स) पर ईमान ले आए और ७० आलिमो में से कुछ ईमान ले आए बाकी मुकर गए और एक नई शर्त रखी की हम सब ईमान ला सकते हैं अगर सालेह बिन अबिद एक पहाड़ के

शिकम से एक ऊठ्नी निकाले जो की १० माह की गाभिन हों I तभी अल्लाह की वही आई के "ऐ सालेह बिन अबिद इसे क़ुबूल कर लो" और आपने एक पहाड़ पर पहुँच कर सभी आलिमो को भी जमा किया और कहा देखो उस पहाड़ को, सब देखने लगे और किसी हामला जानवर की चीखने की आवाज़ आने लगी आलिमो की आंखे फटी की फटी रह गई I जब उन्हों ने देखा की एक लहीम शहीम ऊठ्नी जो कि गाभिन है उसी वक्त ६ आलिम ईमान ले आए, बकिया बोले हम शहर जा कर अपने लोगो में मशवरा करेंगे फिर ईमान लायेंगे I

खुदा परहेज़गारो का हर कदम साथ देता है और तमाम तकलीफों के बाद उन्हें ही कामयाब करता है I

परहेज़गारी का पैगाम लेकर **हज़रत दाउद (अ.स)** दुनिया में तशरीफ़ लाए और गरीब गुरबा की ज़िन्दगी बिताते हुए खुदा ने आपकी परहेज़गारी का इनाम हुकूमत की शक्ल में दिया जब दाउद (अ.स) ने बादशाह तालूत के कहने पर ज़ालिम जलूत को मार डाला और तलूत ने इसके बदले में अपनी बेटी की शादी आप के साथ की और अपनी हुकूमत की बाग़-डोर सौंपी, आप अपनी हुकूमत की निगरानी खुद ही किया करते थे I रात के अंधेरे में अपना हुलिया बदल कर आवाम से मुलाकात करते थे और हुकूमत के निजाम के बारे में खामिया मालूम करते थे

और अगले ही दिन उन खामियों को दुरूस्त करते l एक बार जब आप हुकूमत में अपनी रियाया से मुलाक़ात कर रहे थे तभी एक फ़रिश्ता अल्लाह के हुक्म से इंसानी शल्क में हाज़िर हुआ आप उससे मुखातिब हुए और पुछा हुकूमत-ए-दाउद के और उनके बारे में जनाब आपकी क्या राय है l फ़रिश्ता बोला हुकूमत का निजाम बहुत बेहतरीन है और बादशाह सुबहन अल्लाह लेकिन अगर बादशाह अपने शाही खजाने से अपने एहलो अवाल को दौलत देना बंद कर दे तो कितना अच्छा होता l बस यह सुन्ना था की आपने शाही खजाने से अपने हाथ खीच लिए और बेहतर रोज़ी के लिए खुदा से दुआ करने लगे l जैसे की कुरआन की **"सूरेह सबा की आयत न.१०"** में लिखा है l हमने दाउद को अपनी तरफ से बधाई दी ऐ पहाडो और परिंदों दाउद के साथ रूजू हो कर (अल्लाह के गुण) गाओ और उस (हज़रत दाउद अ.स) के लिए हमने लोहे को मुलायम कर दिया की पूरी जिरा बख्तर बनाए और कड़ीयो के जोड़ने में अंदाज़ का ख़याल रखा और तुम सब भले काम करो, जो कुछ तुम करते हो मैं देखता हूँ l इस तरह खुदा ने आपको जिरा बनाने का इल्म अता किया l जिससे आपको बेशुमार दौलत हासिल हुई. खुदा परहेज़गारो को ऐसा ही सिला देता है l खुदा ने आपको ज़ुबूर (किताब-ए-खुदा)

अता की जिसकी तबलीग आप ता उम्र करते रहे और आपने बेटे सुलेमान (अ.स) को बादशाहत सौंप कर खुदा के पास पहुँच गए।

अब खुदा ने पैगाम पहुंचाने के लिए **हज़रत सुलेमान (अ.स)** को रिसालत सौंपी। खुदा ने आपको इतनी दौलत और कुवत सौंपी जितना के किसी पैगम्बर को नहीं सौंपी। खुदा ने हवा को आपके ताबे में कर दिया **कौम-ए-जिन, देओ, शैतान, इंसान सब आपके काबू में थे।** आपको चरिन्दो परिंदों और चींटियो की जुबान का इल्म था। आप ज़ुबूर की पाक आयातों को लोगो को सुनाते और पूरी तरह से एक खुदा के होकर रहे। आपने खुदा के हुक्म से **बैतुल मुक़द्दस** की तामीर के लिए जिन्नातो को हुक्म दिया।

जिन्नात बेश कीमती याकूत और हीरो से बैतूल मुक़द्दस की तामीर करते रहे। आपने एक मीनार बनवाई थी जिस्से आप तामीरी काम की निगरानी करते थे और एक दिन आपने हुक्म दिया के कोई भी मेरे करीब ना आए, जब तक मैं उसे हुक्म ना दूँ। चुनांचे वह अपना असा टेके खड़े थे और मस्जिद-ए-अक्सा की तरफ आपका रूख था जितने भी जिन और शैतान थे आपके डर से काम को अंजाम दे रहे थे। इधर खुदा ने आपकी रूह को अपने पास बुलालिया, लेकिन जिस्म असा के सहारे टिका रहा और जिन्नों में काना फूसी होती की एक साल हो गया है, अभी

तक हमारे बादशाह अपनी जगह पर ऐसे ही टिके हैं और जिस दिन बैतूल मुक़द्दस की तामीर पूरी हो गई, खुदा ने दीमक को हुक्म दिया की सुलेमान का असा चट कर जाओ और जैसे ही असा गिरा आपका जिस्म भी ज़मीन पर लेट गया और जैसे ही जिन्नों को खबर लगी के सुलेमान (अ.स) की वफात हो गई है | सब अपना काम छोड़कर भाग गए, आपको इसी बात का डर था | इस लिए आपने खुदा से दुआ की थी " ऐ खुदा अगर मौत का वक्त आ जाए और बैतूल मुक़द्दस का काम पूरा ना हो पाए तो जिन्नों को मेरी मौत की खबर ना लगने पाए" और खुदा ने अपने इस परहेज़गार की दुआ क़ुबूल फरमाई और जब आपका आखरी वक्त करीब आ गया तो आप अपने महल के झरोखे के पास खड़े हो गए, जहां पर किसी को जाने की इज़ाज़त नहीं थी | आपके हाथ में एक असा था जिसके सहारे आप खड़े थे | खुदा ने आपकी रूह कब्ज़ करवा ली लेकिन जिस्म ऐसे ही खडा रहा | जैसे कोई जानदार खडा हो तमाम जिन और शैतान आपको दूर से देखते रहते थे और जैसे ही बैतूल मुक़द्दस बन कर तैयार हो गया | तभी खुदा ने दिमाग को हुक्म दिया की असा-ए-सुलेमान खा जाओ और जैसे ही असा गल गया आपका जिस्म फर्श पर लेट गया | महल के तमाम लोग यह देखकर आपको उठाने पहुंचे तब लोगो को मालूम पड़ा के आप पर्दा कर चुके हैं |

इस तरह खुदा ने अपने परहेज़गार की दुआ क़ुबूल की. और जिन्नातो को आपके इन्तेकाल की खबर नहीं लगने पाई l

परहेज़गारी को अपनाते हुए और चलते हुए खुदा ने **<u>हज़रत दानियाल (अ.स)</u>** को भेजा आप बैतूल मुक़द्दस में तालीम हासिल कर रहे थे और आपके एक दोस्त जिनका नाम **हज़रत अज़ीज़ (अ.स)** यह भी आपके साथ इल्म हासिल कर रहे थे l इस दरमियान बैतूल मुक़द्दस को लूटने के इरादे से **बखते नसर** ने हमला कर दिया l बैतूल मुक़द्दस की तमाम दौलत हीरे जवहरात सोना चांदी सब लूट लिया यहाँ तक के बैतूल मुक़द्दस के दरवाजों और दीवारों पर लगे हीरे जवहरात भी लूट लिए l तमाम लोगो का खून बहाया और क़त्ल कर दिया l उसके इल्म में यह था की दानियाल (अ.स) और अज़ीज़ (अ.स) बड़े आलिम है इस लिए इन दोनों पैगम्बरों को अपने साथ ले गया और जैसे ही अपने महल में दाखिल हुआ l उसने (बखते नसर) ने हज़रत दानियाल (अ.स) को एक गहरे कुए में फेक दिया, इस कुए में एक खूंखार शेरनी रहती थी l बादशाह का यह तरिका था की वह जब ज्यादा गुस्से में हुआ करता था तो सज़ा के तौर पे अपने दुश्मन को इस कुए में डाल दिया करता था, ताकि अन्दर की शेरनी इसको अपना भोजन बना ले l हज़रत दानियाल (अ.स) को कुए में डाल कर दुसरे पैगम्बर हज़रत अज़ीज़ (अ.स) को कैद में डाल

दिया। काफी वक्त गुजर गया तकरीबन यूँ समझो के बखते नसर भूल ही गया के उसने क्या किया था।

खुदा अपने परहेज़गारो को कभी तनहा नहीं छोड़ता। कुछ अरसे बाद खुदा ने बखते नसर को एक ख्वाब दिखाया जो इस तरह था "आसमान से बहुत से सितारे और तमाम फ़रिश्ते एक कुए में गिर रहे हैं जिसकी तादाद नहीं"। आंखे खुलते ही बखते नसर घबरा गया और फ़ौरन उसको याद आ गया के मैंने इस कुए के अन्दर हज़रत दानियाल (अ.स) को फेक दिया था ताकि शेरनी उनको चीर फाड़ कर दे। बादशाह वजीर को साथ लेकर कुए के पास ले गया और झाकने लगा और देखते ही उसके होश उड़ गए, उसने देखा की हज़रत दानियाल (अ.स) तो आराम फरमा रहे हैं और पहले से कई ज़्यादा तंदुरुस्त और तरो-ताज़ा हैं और वह भूखी शेरनी उनके इर्द गिर्द चक्कर काट रही है। जैसे मानो वह उनकी हिफाज़त कर रही हो सिपाही की तरह। बखते नसर ने वजीर से कहा डोल अन्दर डालो और दानियाल को बाहर निकाला जाए, चुनांचे आप कुए से बाहर निकाले गए और आपको बा इज्ज़त महल में ले गए काफी खातिर तवाज़ो की और अदब के साथ पूछने लगे " ऐ दानियाल मैंने तुमको मौत के इरादे से इस कुए में फेका था आप कैसे बच गए ?" हज़रत दानियाल (अ.स) ने जवाब दिया बेशक मैं मौत के कुए में था

और आपने मुझे फेका, तो मैं बेहोश पडा था जब मुझे होश आया तो मेरे जिस्म के तमाम हिस्सों से खून बह रहा था. दर्द से मेरा पूरा जिस्म कांप रहा था l इसी दरमियान एक भूखी शेरनी मेरे सामने खड़ी हो गई, मैं घबरा कर पीछे हटा लेकिन वह मेरे करीब आ गई और मेरे ज़ख्मो को अपनी ज़ुबान से चाटने लगी धीरे धीरे मेरा डर ख़त्म हो गया, मुझे ऐसे लगने लगा जैसे शेरनी मेरे ज़ख्मो पर मरहम लगा रही हो, मेरे सारे ज़ख्म ठीक हो गए, फिर मुझे भूख लगी मैं परेशान के मुझे इस कुए में खाना कहाँ से मिलेगा, यह सोच कर मैं लेट गया कुछ ही पल में शेरनी अपने थनों को मेरे मुहं के करीब लाइ और अपने आप मेरे होट उसे चूसने लगे और जब तक मेरा पेट नहीं भरा दूध लगातार निकलता रहा l

इस तरह तब से लेकर आज तक खुदा इस शेरनी के दूध से मेरी भूख को मिटाता रहा l हज़रत दानियाल (अ.स) की बात सुनने के बाद हज़रत अज़ीज़ (अ.स) को कैद से रिहा किया गया और तमाम दौलत देकर उन्हें वतन रवाना कर दिया l लेकिन हज़रत दानियाल (अ.स) अपने वतन ना जाकर इसी हुकूमत में रहे और आप वक्त-वक्त पर बादशाह बखते नसर की मदद करते रहे, आपने पूरी ज़िन्दगी खुदा की अतात में गुज़ार दी आपने एक ज़ालिम बादशाह को ईमान वाला बना दिया आपको आने वाले आखरी नबी मुहम्मद (स.अ) को देखनी की बड़ी

तमन्ना थी। इस लिए आपकी वसीयत थी के जब मेरा इन्तेकाल हो जाए तो मेरे जिस्म को गुसल करके और कफ़न लपेटकर मेरे हुजरे में रख दिया जाए और हुजरे को हमेशा के लिए बंद कर दिया जाए। आपकी वसीयत पर अमल किया गया और जब आखरी नबी मुहम्मद (स.अ) ने इस हुकूमत पर हमला किया और आपके हुजरे का ताअला तोडा तो देखा के एक जिस्म कफ़न से ढ़का है। और निहायत मीठी खुशबू आ रही है और सबसे बड़ी बात यह थी के आपकी आंखे खुली हुई थी। सहाबाओ ने नबी (स.अ) को जब यह बात बनाई तो नबी (स.अ) ने कहा वह हज़रत दानियाल (अ.स) का जिस्म है और उनको मेरा इंतज़ार है और फ़ौरन हुजरे में गए और अपने हाथ से आपकी आंखे बंद की और **सुस** नदी के बीच आपको दफ़न कर दिया। इस तरह खुदा ने एक परहेज़गार की आखरी तमन्ना पूरी की।

परहेज़गार के मौज़ू को आगे बढाते हुए उस पैगम्बर की बात करते हैं जिसे खुदा ने नाम के साथ भेजा आपका नाम **याहिया इब्ने ज़करिया (अ.स)** था। खुदा ने आपको बचपन यानी तक़रीबन **१० साल की उम्र में ही नबूवत बक्शी**। आपकी माँ का नाम **उम्मे कुलसुम** था। आप बड़े फरमा बरदार थे। एक बार आप घर से बाहर निकल गए और एक बाग़ में पहुँच कर खुदा की अतात करने लगे और जब हालात-ए-यकीनी में पहुँच गए तो आपको जन्नत और दोज़क साफ नज़र आने

लगी। आप इसी हालात में अपने गुनाहों की माफ़ी मांगने लगे और कहने लगे "ऐ मेरी माँ मेरा दूध बक्श दे और लगातार यह ही दुआ मांगते रहे"। तभी घुमते-घुमते आपकी वालिद बाग़ में पहुँच गई और आपकी आवाज़ सुनकर कहने लगी हाँ मैंने दूध माफ़ किया। तभी अचानक आपकी आँख खुल गई तो आपने अपनी वालिदा को अपने पास पाया। आप उनसे मिलकर बहुत रोए, आप उनको घर ले जाती है। मैं यह देख रहा हूँ के बचपन से ही परहेज़गारी पर चल रहे हैं आपके इस किरदार पर खुदा ने आपको १० बरस की उम्र में ही पैगम्बरी अता की। आप शुरू ही से औरतो से दूर रहे और आपने इस्लाम की तमाम तालीमात अवाम तक पहुंचाई और लोगो को एक खुदा की अतात की तबलीग की। आप ईसा (अ.स) से ६ महीने पहले दुनिया में तशरीफ़ लाए और बचपन से लेकर बड़ी उम्र तक खुदा की अतात करते रहे।

वक्त का बादशाह हरदूश आपकी बड़ी इज्ज़त करता था और मुश्किल हालात में आपसे मशवरा करता था लेकिन एक वाकिए ने आप और बादशाह के बीच में दुश्मनी करवा दी आपने बादशाह से कहा के "आप अपनी सगी भतीजी से शादी नहीं कर सकते वह आप पर हराम है"। लेकिन नशे में मदहोश बादशाह ने अपनी ख्वाहिश पूरी करने के खातिर हज़रत याहिया (अ.स) का सर कलम (काट)

करवा दिया और जब आपका कटा सर बादशाह हरदूस के सामने पेश किया गया I तो उसने अपनी तलवार से आपके सर से खेलना चाहा I तभी कटे सर से आवाज़ आई " ऐ हरदूस तुझपर हरदोशिबा (भतीजी) हराम है", तो उसका नशा काफूर हो गया और कुछ ही समय बाद बादशाह मारा गया और हुकूमत पर कब्ज़ा हो गया. खुदा अपने परहेज़गारो का बदला लेता है I

परहेज़गारो की फेहरिस्त में अब नाम आता है **हज़रत ईसा (अ.स)** का जो खुदा के पैदाइशी परहेज़गार थे. वह **कौम-ए-नसारा (इसाई कौम)** को ता-उम्र एक खुदा की अतात करने को कहते रहे I वह अलग बात है इन्ही के हवारी ने उन्हें धोखा दे दिया और सूली पर चढ़ा दिए गए I वह अलग बात है खुदा ने अपने परहेज़गार को अपने पास बुला लिया और आज तक यह परहेज़गार हयात हैं I और उनकी वालिदा जनाबे **मरियाम (अ.स)** भी एक परहेज़गार थी जब वह कुवारी थी और अपनी जवानी को पहुंची तो एक फ़रिश्ता हाज़िर हुआ और बोला "ऐ मरियम तुझे खुदा ने चुन लिया है तुम रुकु करने वालो में और सजदे करने वालो में शरीक हो और तुम्हारे शिकम से औलाद पैदा होगी" आप घबरा गई और बोली मैं बदकार नहीं हूँ, मुझे आज तक किसी मर्द ने छुआ नहीं है, तो मैं बच्चा कैसे जन सकती हूँ I तब फ़रिश्ते ने कहा के खुदा जैसे चाहता है वह फ़ौरन हो जाता है I तुम्हे घबराने

की ज़रूरत नहीं है सब खुदा करने वाला है l और जैसा फ़रिश्ते ने कहा था वैसा ही हुआ l आपने अपने बेटे की अच्छी तरह परवरिश की यहाँ तक बच्चा पैदा होते ही बात करता है और लोगो के सवालों का जवाब देता है l ईसा (अ.स) ने कहा की मैं ईसा इब्ने मरियम हूँ अल्लाह का भेजा हुआ पैगम्बर और रसूल हूँ l यह सुनते ही तमाम तोहमत लगाने वालो पर खौफ तारी हो गया और भाग खड़े हुए l यह बात बिलकुल साफ है के परहेज़गारो के सामने गुनाहगार नहीं टिक सकता l जब आपको (मरियम अ.स) यह एहसास हुआ की दुश्मन आपको (ईसा अ.स) को क़त्ल ना कर दें, तो आप हज़रत ईसा (अ.स) को लेकर बैतूल मुक़द्दस से इरान फिर इराक पहुंची यहाँ कुछ दिन रूकी फिर पाकिस्तान से हिन्दुस्तान के लद्दाख पहुंची और यहाँ पर काफी अरसा रहीं l ईसा (अ.स) की तालीम यहीं पर हुई, जब मरियम (अ.स) ने एक शक्स को आपकी तालीम के लिए मुक़र्रर किया. आलिम ने हज़रत ईसा (अ.स) से कहा के बेटा बोलो "बिस्मिल्लाह" आपने आलिम से पुछा "बे" का क्या मतलब ? l "सीन" का क्या मतलाब ? l और "मीम" का क्या मतलब है ? l बच्चे के मुह से इस तरह के सवाल सुनकर आलिम हैरत में पड़ गया और मरियम (आ.स) से बोला मैं इन्हें क्या पढ़ाऊं यह तो पहले से ही पढ़े हैं l

इस बात से यह ज़ाहिर होता है की खुदा अपने पैगम्बरों को गैब से इल्म अता करता है हज़रत ईसा (अ.स) को खुदा ने मौजुज़े अता किए I आप अंधे को नूर अता करते थे और मुर्दे को ज़िन्दगी और लंगड़े को कुवत और ताकत अता करते थे I एक बार आपने हवारियो के लिए दुनिया में एक मौजिज़ा दिखाया I अल्लाह के हुक्म से आपने खाने के लिए आसमान से एक ख्वान उतारने की दुआ की और खुदा ने आपकी दुआ क़ुबूल की और ख्वान उतार दी, और एक ऐसा ख्वान उतार जो की मछली की शक्ल में था और लोग उसको खाते ही जा रहे थे लेकिन इस खाने में इतनी बरकत की सैकड़ो लोग खा चुके फिर भी खाना ख़त्म नहीं हुआ I कई दिनों के बाद खुदा ने हुक्म दिया के यह खान अब वह लोग खायेंगे जो लोग ईमान वाले हैं I हज़रत ईसा (अ.स) ने जैसे ही खुदा के फरमान का ऐलान किया फ़ौरन काफ़िरो ने यह कहना शुरू कर दिया की यह जादू से हो रहा है यानी ईसा (अ.स) जादूगर हैं I खुदा अपने परहेज़गार पर यह इलज़ाम कैसे बर्दास्त करता चुनांचे दुसरे दिन सुबह होते ही सभी नाफरमान और मुनकिर सूअर की शक्ल में तब्दील हो गए I

हज़रत ईसा (अ.स) खुद तबलीग करते थे और अपने हवारियों को भी अलग अलग जगहों पर भेजते थे और आप अपने मौजुजे देदिया करते थे, ताकि

ईमान की दावत फैलती जाए और दुनिया में नामे खुदा रौशन रहे I जब वक्त के बादशाह को खबर मिली की ईसा (अ.स) पर ईमान लाने वालो की तादाद बढती जा रही है और उसको यह बात आगे नुक्सान दे सकती है, तो उसने एक अफवह फैलाई के ईसा (अ.स) अपने को खुदा कहलवा रहे है जो की निहायत गलत है I जब बादशाह ने देखा की ईसा (अ.स) के खिलाफ खबर फ़ैल चुकी है तो उसने एक नया कानून बनाया जिसके तहत अपने को खुदा केहेलवाने वाले को बतौर सज़ा-ए-मौत सूली पर चढ़ाया जाएगा I इस तरह बादशाह ने यह ऐलान करवा दिया I अब बादशाह के लोगो ने ही ईसा (अ.स) के खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई के ईसा अपने को खुदा कहता है. इस शिकायत पर बादशाह ने अपने वजीर को हुक्म दिया के फ़ौरन ईसा (अ.स) को कैद में ले लो और इस तरह खुदा के परहेज़गार को कैद खाने में डाल दिया गया I

बादशाह ने ढोल पिटवाया के सभी लोग मैदान में इकठ्ठा हो ताकि सबके सामने ईसा को सूली पर चढ़ाया जाए और लोग इबरत हासिल करें I चुनांचे जब मजमा जमा हो गया तो बादशाह ने वजीर से कहा के ईसा को कैद खाने से मैं खुद लेकर आता हूँ और हो सकता है वह धोका दे और भागने की कोशिश करें तो उसे पकड़कर सूली पर चढ़ा देना, मेरा इंतज़ार भी मत करना I यह कहकर बादशाह

कैद खाने में दाखिल हुआ और इसी बीच खुदा ने जिब्राइल अमीन को भेजा और आपको अपने पास बुला लिया | इस वक्त **ईसा (अ.स) की उम्र ५५ साल** थी |

बादशाह अन्दर दाखिल हुआ तो खुदा ने बादशाह की शक्ल ईसा (अ.स) जैसी कर दी, बादशाह ने जब ईसा (अ.स) को कैद खाने में नहीं पाया तो चिल्लाया देखो ईसा यहाँ से भाग गया है | उसको पकड़ो यह कहते हुए कैद खाने से बाहर भाग. अब क्युकी बादशाह की शक्ल ईसा (अ.स) जैसी बन चुकी थी इस लिए वजीर समझा यह ईसा (अ.स) है, वजीर उसको पकड़कर सूली पर लटकाने के लिए मैदान में ले जाने लगा | यह चिल्लाता रहा मैं "बादशाह" हूँ "ईसा" नहीं हूँ | वजीर बोला तू मुझे धोखा दे रहा है, तू झूटा है, तुझे तो मैं सूली पर चढ़ा कर ही दम लूंगा और वजीर ने बादशाह को सूली पर चढ़ा दिया. अब वजीर को ख़याल आया के मेरा बादशाह कहाँ है ? | मैं उसे खुश खबरी सुनाऊं | उसने इधर उधर देखा और अचानक उसकी नज़र सूली पर गई तो देखा यह तो उसका बादशाह है ईसा नहीं | यह नज़ारा सबने देखा की सूली पर बादशाह चढ़ा ना की ईसा (अ.स) |

इस तरह खुदा ने अपने परहेज़गार की हिफाज़त की | आज भी ईसा (अ.स) आसमानों में हैं और खुदा आपको दुनिया में वापस भेजेगा आपकी शादी होगी और ४० साल तक आप दिनिया पर हुकूमत करेंगे इन्शा-अल्लाह-ताअला,

और जब मेहंदी (अ.स) दुनिया में नमुदार हो जाएंगे तो आप मक्के पहुँच जाएंगे और वक्त मगरिब की नमाज़ की तैयारी हो रही होगी. तभी अचानक लोगो की निगाह ऊपर उठेगी तो लोगो को हज़रत ईसा (अ.स) नज़र आएंगे एक सीढ़ी मंगाई जाएगी और आप नीचे तशरीफ़ लाएंगे और बा-जमात नमाज़ अदा करेंगे इन्शा-अल्लाह।

अब तक हमने मुख्तलिफ परहेज़गारो की बातें कही अब उस परहेज़गार की बात करते हैं जिसके लिए दुनिया बनाई गई और जो सरदार-ए-पैगम्बर भी है। खुदा का महबूब और इतनी मोहब्बत की आपकी सभी सुन्नतो को फ़र्ज़ का दर्जा मिला नबी की ज़िन्दगी पैदा होने से लेकर पर्दा-ए-गैब तक एक मुकम्मल परहेज़गार की तरह गुजरी। हमने तमाम पैगम्बरों की ज़िन्दगी देखि और यह भी देखा पैगम्बर गुज़र गए तो कौम ना फरमान हो गई और वह उनकी सुन्नत पर अमल नहीं करते थे। लेकिन आप **सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम** की परहेज़गारी इतनी मज़बूत थी की आज तक **रसूल (स.अ)** की सुन्नते ज़िंदा है और खुदा ने लग-भग सब पर अपनी मोहर लगा दी। इसका मतलब यह हुआ की खुदा की नज़रों में नबी (स.अ) की परहेज़गारी सबसे ज़्यादा पसंद आई। अब हम अपनी बात को **रसूल (स.अ)** की तमाम रिवायतो से साबित करेंगे। जैसे की जब आप

छोटे थे और मज़हब-ए-इस्लाम का ऐलान भी नहीं हुआ था। फिर भी आप तन्हाई में गार-ए-हीरा में जा कर कई-कई दिन गुज़ारते और अपने खुदा की अतात करते। यहाँ तक की एक वक्त ऐसा भी आया जब दुश्मन-ए-रसूल ने आपके घर को घेर लिया फिर भी आप घबराए नहीं और आपने यह ऐलान किया की अगर यह काफिर मेरे एक हाथ पर सूरज और एक हाथ पर चाँद भी रख दें तब भी हम अपने खुदा की अतात नहीं छोड़ेंगे, अगर सब्र की बात करें तो वह वाकिया याद आता है जब आप मक्के में नमाज़ अदा कर रहे थे, तो अबूज़ेहल ने कहा क्या ही बढ़िया मौक़ा है ? । यह कहकर उसने ऊंट की लीद आपके चहरे मुबारक पर लगा दी आप अपनी नमाज़ में मुब्तिला रहे और उफ़ तक नहीं किया। नमाज़ अदा करी और अपने घर को चले गए।

हमने **नबी (स.अ)** का एक वह वक्त भी देखा जब आप और आपका एहलो अवाल ३ दिन का भूखा था और चौथे दिन खाने का इंतेजाम हुआ और जब सब लोग दस्तरख्वान पर खाने के लिए बैठे तभी एक साहिल ने आवाज़ दी "मैं ३ दिन से भूखा हूँ खुदा के नाम पर मुझे खाना दे दो", आवाज़ सुनते ही नबी (स.अ) ने वह पूरा खाना उसके हवाले कर दिया और रोजा रख लिया। आपके साथ साथ सभी लोगो ने रोजा रख लिया। यानी चौथे दिन भी आपका परिवार भूखा सोया।

अगले दिन फिर किसी तरह खाने का इंतेजाम हुआ, लेकिन ऐन मौके पर एक मुसाफिर ने आपके घर आवाज़ लगाईं और कहा "मैं बहुत भूखा हूँ क्या खुदा के नाम पर मुझे खाना मिलेगा" आपने पूरा खाना उस मुसाफिर को सौंप दिया और भूखे पेट सो गए। अपने सब्र पर कायम रहे। अगले दिन आपने फिर से खाने का इंतेजाम किया और जैसे ही खाने बैठे तभी एक कैदी जो रिहा हुआ था आपके घर दस्तक देता है और खाने का सवाल करता है आपने पूरा खाना उसके हवाले कर दिया और सब्र का रोजा रख लिया।

क्या है कोई दूसरा परहेज़गार जो आपसे मुकाबला करे ? । नहीं-नहीं हरगिज़ नहीं, यानी परहेज़गारी का दूसरा नाम सब्र और ताम्मुल है। नबी (स.अ) का एक वाकिया और याद आ रहा है जब एक औरत आपके पास आई और बोली "या अल्लाह के नबी (स.अ) मेरा बेटा मिठाई बहुत खाता है, आप इसे मना कर दीजिए की यह मिठाई ना खाए" आपने कहा आप ३ दिन बाद आए। जब यह औरत ३ दिन बाद अपने बेटे को लेकर आपके पास पहुंची तो आपने उसके बेटे के सर पर हाथ रखते हुए कहा बेटा तुम मिठाई खाना छोड़ दो लड़के ने जवाब दिया जी हाँ। औरत ने आपसे फिर सवाल किया की आप यह बात ३ दिन पहले भी बोल

सकते थे. तब नबी (स.अ) ने फरमाया मैं भी मिठाई खाता था I तो मैं कैसे मना करता I

अब फैसला करना होगा कितनी बरकतों वाले नबी (स.अ) एक मामूली बच्चे के लिए अपनी पसंदीदा नेमत को कुर्बान देते है I क्या किसी दुसरे पैगम्बर ने ऐसी कुर्बानी की मिसाल दी है? I

तभी तो हमने कहा की परहेज़गारो के सरदार हैं, हमारे नबी (स.अ) I हम इन बातो से और किरदारों से एक सबक सीख रहे हैं की परहेज़गारी पर चलना कुर्बानी देने के बराबर है I एक सच्चा परहेज़गार वह कहलाता है जो अपनी नफ़्स पर काबू कर ले और अपनी जान माल और औलाद वक्त पड़ने पर राहे खुदा में कुर्बान कर दे और उसे ज़रा भी पछतावा ना हो I ऐसे लोग ही परहेज़गार कहलाते हैं I

खुदा हम सभी मुसलमानों को परहेज़गार बन्ने की तौफीक अता फरमाए, **आमीन सुम्मा अमीन I**

हज़रत नुसरत आलम शेख (जफ़र)